प्रथम प्रश्न–पत्र
खण्ड (अ)
इकाई – 3 (आधुनिक भारत)

- ब्रिटिश उपनिवेश के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रिया: कृषक एवं आदिवासियों का विद्रोह, प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन/संग्राम

- भारतीय पुनर्जागरण: राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं इसके नेतृत्वकर्ता

- गणंतत्र के रुप में भारत का उदय, राज्यों का पुर्नगठन, मध्यप्रदेश का गठन, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के प्रमुख घटनाएँ

प्रयासIKSG
An Institute for MPPSC Examination

ब्रिटिश उपनिवेश के प्रति भारतीयों की प्रतिक्रिया: कृषक एवं आदिवासियों का विद्रोह,प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन/संग्राम

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

1. बारदोली

- गुजरात के बारदोली में 1928 ई. में सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में किसानों ने एक आंन्दोलन किया, जिसे बारदोली सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है।
- इस आन्दोलन के पश्चात ही पटेल को सरदार की उपाधि प्रदान की गई।

2. राजकुमार शुक्ल

- ये बिहार के चंपारण क्षेत्र के एक किसान नेता थे।
- इन्होंने ही गांधी जी को चंपारण के किसानों को समस्याओं के निदान हेतु चम्पारण आमंत्रित किया था।

3. जे.पी.कृपलानी

- प्रसिद्व राजनीतिज्ञ तथा गॉधीवादी विचारक
- एक किसान नेता जो कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे।

4. मुंडा आन्दोलन

- अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उनकी शोषणपरक नीतियों से तंग आकर बिरसा मुंडा के नेतृत्व में दक्षिण बिहार में 1895–1900 तक चलाया जाने वाला जनजातीय आन्दा. ेलन

An Institute for MPPSC Examination

5. पाइक विद्रोह

- 1017 ई. में उड़ीसा के खुर्दा में हुआ विद्रोह।
- पाइक लगान मुक्त भूमि का उपयोग करने वाले सैनिक
- पाइक नेता जगबंधु ने अंग्रेजों को पराजित कर पर पुरी अधिकार किया।

6. कृषि का वाणिज्यीकरण

- 19 वी शताब्दी के उत्तरार्ध से विभिन्न कारणो से कुछ प्रमुख फसलो का उत्पादन उपभोग के लिए नही,अपितु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्टीय मण्डियों में विक्रय हेतु होने लगा। यह प्रक्रिया कृषि का बाणिज्यीकरण कहलाई।

7. 19 वी शाताब्दी में भारतीय हस्तशिल्प उघोग के पतन के कारण।

- कारखाना पद्वति से निर्मित अंग्रेजी वस्तुओं की तुलना में हाथ से निर्मित भारतीय वस. तुओं का महँगा होना।
- भारत पर मुक्त व्यापार नीति का थोपा जाना–
- रेल मार्गो का विकास

8. भारत का पहला समाचार पत्र कौन सा था? इसे कब व किसने प्रकाशित किया।

- पहला समाचार पत्र: द बंगाल गजट
- इसे 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने प्रकाशित किया।

9. संथाल विद्रोह

- यह विद्रोह 1855–56 में जमींदारो,साहूकारो के शोषण के विरूद्व प्रारंभ हुआ
- प्रसिद्व नेता सिद्बू और कान्हू थें।

10. कोल विद्रोह

- छोटा नागपुर क्षेत्र में 1831 में कोला द्वारा शोषण के विरूद्व किया गया विद्रोह
- इस विद्रोह का नेतृत्व सुर्गा और सिगराय द्वारा किया गया।

11. रामोसी विद्रोह

- 1822 ई में पश्चिम भारत में हुआ विद्रोह
- इस विद्रोह का नेता चित्तर सिंह था।

12. रम्पा विद्रोह

- यह विद्रोह आंध्र प्रदेश के तटवर्ती क्षेत्रों के पहाडी रम्पा आदिवासियों ने ब्रिटिश समर्थक नए जमींदारों के विरूद्व किया।
- रम्पा विद्रोह का नेतृत्व अल्लूरी सीमाराम राजू ने किया।

13. तिनकठिया पद्वति क्या थी?

- मुख्यता: पूर्वी भारत में अंग्रेजी शासन काल में लागू एक कृषि पद्वति
- जिसमें किसानों को उनकी जमीन के 3/20 भाग पर नील उगाने के लिए मजबूर किया जाता था।
- इस पद्वति के विरोध में चम्पारण विद्वोह हुआ था।

14. स्थायी बन्दोंबस्त

- 1793 में लार्ड कर्नवालिस द्वारा बंगाली, बिहार,उडीसा एवं उत्तर प्रदेश में लागू भू–राजस्व वसूली प्रथा।
- इसमें जमींदार को भू–स्वामी मानकर उसे भू–राजस्व वसूल एवं जमा करने की जिम्मेदारी सोंपी गयी।

15. रैययतवाडी व्यवस्था

- यह ब्रिटिश काल की भू–राजस्व व्यवस्था थी,इस व्यवस्था के जन्मदाता थामस मुनरो एवं कैप्टन रीड को माना जाता है।
- तमिलनाडु,मद्रास,बम्बई के कुछ क्षेत्र,पूर्वी बंगाल तथा आसाम में लागू इस भू–राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत किसान को भू–स्वामि माना गया तथा वही व्यक्तिगत रूप से भूराजस्व का भुगतान करने के लिए जिम्मेदार था।

16. सन्यासी विद्रोह

- यह बंगाल तथा बिहार के क्षेत्र में औपनिवेशिक शोषण के विरूद्व फेला एक कृषक आन्दोलन (1770–80) था।
- इसका वर्णन बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास आनंद मठ में किया गया है।

17. पागलपंथी आन्दोलन

- जमींदारो तथा ब्रिटिश अधिकारियों के आर्थिक शोषण के विरूद्व बंगाल के क्षेत्र में हुआ विद्रोह।
- इस आन्दोलन के नेता टीपू,जानक नाथर थे।

18. ताना भगत आन्दोलन

- यह सामाजिक एवं धार्मिक तथा उरांव जनजाति के उत्थान के लिए 1914–15 में रांची, पलाम् एवं हजारीबाग क्षेत्र में ताना भगत द्वारा चलाया गया आन्दोलन था।
- तानाभगत सदस्यों ने गांधी के असहयोग आंदोलन और वाद के राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभायी।

19. नील दर्पण

- नील दर्पण दीन बंधु मित्र द्वारा रचित उपन्यास है,जिसमें नील की खेती करने वाले किसानों की समस्याओं का वर्णन किया गया है।
- 1860 में हुए नील विद्रोह के दोरान इस उपन्यास ने आन्दोलनकारियें को प्रेरणा देने का काम कियज्ञं

आनन्द मठ

- आनन्द मठ बंकिम चंद्र चटटोपाध्याय द्वारा लिखित बंगाली उपन्यास है।
- इसमें सन्यासी विद्रोह का वर्णन मिलता है,साथ ही भारत का राष्टीय गीत वन्दे मातरम भी इसी उपन्यास से लिया गया है।

20. भील विद्रोह

- राजस्थान के बांसवाडा और डूंगरपुर क्षेत्र में हुआ आदिवादी आन्दोलन
- आदिवासी समाज सुधारक गोविन्द गुरू के सुधारो से यह आन्दोलन प्रेरित था।

21. अहोम विद्रोह

- आसाम में 1828 में गोमधर कुंवर के नेतृत्व में हुआ आन्दोलन
- वर्मा युद्व के पश्चात अहोम जनजाति द्वारा कंपनी के शोषण एवं एवं अत्याचार के विरूद्व किया गया था।

22. तेभागाा आन्दोलन

- सन् 1946–47 में बंगाल में जमींदारों के विरूद्व बटाईदारो द्वारा किया गया आन्दोलन
- इस आन्दोलन में बटाईदारों की मांग थी कि फसल का 2/3 भाग उन्हे दिया जाए इसी कारण यह तिभागा आन्दोलन कहलाया।

23. बेगम हजरत महल

- 1857 की क्रांति के दौरान सक्रीय भूमिका निभाने वाली लखनऊ की बेगम हजरत महल
- क्रांति में अंगेजो से संघर्ष किया परन्तु लखनऊ की हार के बाद वह काठमांडू चली गई।

24. कुंवर सिंह

- जगदीशपुर,बिहार के जमींदार तथा 1857 क्रांति के नेतृत्वकर्ता
- 1857 की क्रांति में इन्होने अंग्रेजो का कडी चुनोती दी तथा कई स्थानो पर अंग्रेजी सेना को पराजित किया।

25. नाना साहब

- पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र।
- 1857 ई. की क्रांति को संगठित करने में इन्होने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

26. तात्या टोपे

- 1857 की क्रांति के प्रमुख क्रांतिकारी
- गोरिल्ला युद्व पद्वति के द्वारा इन्होने अंग्रेजो के छक्के छुडाए
- क्रांति के दौरान तात्या टोने ने रानी लक्ष्मी को अंग्रेजो के विरूद्व सहयोग प्रदान किया।

5 □□ां □□प्रश्नोत्तर

27. आधुनिक भारत के इतिहास में कालकोठरी की घटना की चर्चा कीजिए।

- बंगाल के इतिहास में कालकोठरी की घटना का महत्वर्पूण योगदान रहा, हालाँकि इस घटना का प्रभाव बंगाल के साथ—साथ पूरे भारत वर्ष की राजनीति पर भी पड़ा।
- वर्ष 1756 के दौरान बंगाल सूबा, सिराजुद्दौला के नियंत्रण में था। अंग्रेज बंगाल पर अधिकार प्राप्त करने के लिए सिराजुद्दौला की राजनीति के विरुद्ध कार्य कर रहे थे।
- तत्कालीन परिस्थितियों के चलते सिजुद्दौला द्वारा कुछ अंग्रेज बन्दियो को अन्धेरे व छोटे से कमरे में बन्द कर दिया, जिसमें मात्र हवा के आने—जाने के लिए छोटी सी खिड़की मात्र थी। जब दूसरे दिन दरवाजा खोला गया तो 146 कैदियों में से मात्र 23 जीवित बचे।
- यही घटना कालकोठरी की घटना कहलाती है। यहीं से अंग्रेज व सिराज के बीच पूर्णत: शत्रुता भी शुरु हो जाती है।

28. ''अलीनगर की संधि'' का संक्षिप्त वर्णन कीजिए?

- अलीनगर की सन्धि, बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और ईस्ट इंडिया कम्पनी के बीच 1757 को आपसी सहमति से कार्य करने तथा दोनों पक्ष शान्ति बनाए रखे, से सम्बन्धित थी।
- यह एक तरह से संघर्ष विराम सन्धि थी। लेकिन यह संधि अधिक समय तक सफल नहीं हो पायी है, जल्द ही सिराजुद्दौला व अंग्रेज पुन: युद्ध हुआ।

29. ''प्लासी के युद्ध'' की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- प्लासी का युद्ध बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला व अंग्रेजी सेना के बीच वर्ष 1757 में लड़ा गया था।
- नवाब की सेना तुलनीय रुप अंग्रेजों की सेना से विशाल थी। लेकिन नवाब के सेनापति मीर जाफर ने अंग्रेजों से संधि कर, सत्ता के लालच में सिराजुद्दौला के विरुद्ध होकर, अंग्रेजों का समर्थन कर देता है।
- प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों की जीत होती है। मीर जाफर को बंगाल का नवाब घोषित कर अंग्रेजों का आंशिक रुप से बंगाल पर शासन हो जाता है।

30. ''इलाहबाद की संन्धि पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए?

- बक्सर के युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद अंग्रेजों ने 1765 में दो सन्धियाँ

(1) मुगल शासक शाह आलम द्वितीय

(2) अवध के नवाब के साथ की

संन्धि के अनुसार प्रमुख शर्त जैसे कि

- अवध के नवाब को 50 लाख रुपये कम्पनी को हर्जाना देना होगा।
- शाह आलम द्वितीय पूर्ण: कम्पनी के संरक्षण में आ गया।
- अंग्रेजों को बंगाल, बिहार, उड़ीसा पर मालगुजारी का अधिकार
- इत्यादि।

महत्व : इस सन्धि ने पूर्णत: बंगाल को अंग्रेजों के हाथों में सौंप दिया। अंग्रेजों का व्यापारी से सत्ताधारी का दौर शुरु हुआ।

बक्सर का युद्ध किसके मध्य लड़ा गया था। तथा इसके महत्व पर चर्चा कीजिए।

- बक्सर का युद्ध बंगाल के इतिहास में एक निर्णायक युद्ध था जो—

पहला पक्ष	दूसरा पक्ष
मीर कासिम, बादशाह आलम अवध का नवाब	अंग्रेज

के मध्य लड़ा गया था। इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत होती है। बक्सर की लड़ाई का महत्व इतिहास में यह रहा कि, बंगाल में नवाब की सत्ता का सूर्यास्त हो गया तथा बंगाल की सत्ता में अंग्रेजों का सूर्योदय।

- अंग्रेजों का बक्सर विजय उन्हें भारत के सबसे समृद्ध आर्थिक, राजनैतिक, व भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रियासत का मालिक बना दिया। जिस पर कब्जा करना भारत पर कब्जा करने की कुंजी थी।

31. द्वैध शासन प्रणाली से आप क्या समझते हैं? तथा बंगाल में कब शुरु हुई थी?

- जब एक ही सत्ता में दो शासकों द्वारा शासन किया जाए, तो उसे द्वैध शासन प्रणाली कहा जाता है। अर्थात् एक सत्ता के दो शासक।
- बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत सर्वप्रथम राबर्ट क्लाइव द्वारा, 1765 में की गई थी। जिसे 1773 के रेग्यूलेटिंग एक्ट के तहत समाप्त कर दिया गया।
- बंगाल में द्वैध शासन के अन्तर्गत वास्तविक सत्ता का संचालन अंग्रेज का था,जबकि नाममात्र का शासक बंगाल का नवाब था। यहीं प्रणाली द्वैध शासन प्रणाली थी।

32. ''सालबाई की संन्धि'' के बारे में संक्षित चर्चा कीजिए।

- मराठा साम्राज्य और ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधियों के मध्य, प्रथम आंग्ल—मराठा युद्ध को समाप्त करने के लिए 17 मई 1782 को सालबाई की संन्धि पर हस्ताक्षर किए गए थे। जिसमें निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की गई।
- माधवराव द्वितीय को मराठा साम्राज्य में पेशवा के रुप में स्वीकार करना।
- रघुनाथ राव को पेंशन देने पर सहमति
- हैदर अली पर नियंत्रण इत्यादि।
- इस सन्धि का महत्व यह था कि मराठा साम्राज्य और अंग्रजों के मध्य 20 वर्ष तक शान्ति रही।
- इस संन्धि के बाद अंग्रेजों ने अपना ध्यान मैसूर रियासत पर केन्द्रीत कर लिया।

33. भारत में मराठा शक्ति के पराजय के कारणों पर चर्चा कीजिए।

- भारत में अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति तथा मराठा शासकों की आतंरिक कमजोरिया, भारत में मराठा शक्ति की पराजय का कारण रहीं। कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित है:—
- मराठों की दोषपूर्ण आर्थिक व्यवस्था।
- मराठाओं में परस्पर तालमेल, विश्वास की कमी, आपस में युद्ध।
- मराठाओं की दोषपूर्ण सैन्य व्यवस्था व तकनीकी का अभाव।
- प्रमुख मराठा योद्धाओं के बाद धीरे—धीरे योग्य व कुशल नेतृत्व का अभाव।
- बाद के मराठा योद्धाओं में राष्ट्रीयता का अभाव

34. मैसूर रियासत के चतुर्थ युद्ध के तत्कालीन कारण व परिणामों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

- चतुर्थ आंग्ल–मैसूर युद्ध का तत्कालीन कारण श्रीरंगपट्टनम की सन्धि, अर्थात् टीपू द्वारा अंग्रेजों की अधीनता न स्वीकार करना था। इस युद्ध में टीपू सुल्तान मारा जाता है।
- श्रीरंगपट्टनम की सन्धि के चलते, टीपू सुल्तान को, अपने राज्य का आधा हिस्सा तथा बड़ी रकम अंग्रेजों को देनी पडी। सुल्तान स्वाभिमानी शासक था। और इसे बर्दाश्त न करते हुए, अंग्रेजों के साथ चतुर्थ मैसूर युद्ध की लड़ाई लड़ता है। दुर्ग की रक्षा करते–करते वह मारा जाता है।

35. आधुनिक भारत के इतिहास में चर्चित पागलपंथी आन्दोलन क्या था?

- पागलपंथी आंदोलन बंगाल का एक कृषक आन्दोलन था। यह विद्रोह अर्द्ध धार्मिक सम्प्रदाय द्वारा जमींदारों के विरुद्ध था। इस आन्दोलन का गठन करमशाह ने किया था। बाद में उसका बेटा टीपू इसका नेत्व किया। विद्रोह का कारण जमींदारों द्वारा निश्चित सीमा से अधिक कर वसूली था। इसमें मुख्यत: हाजों व गारो जनजातियाँ शामिल थी।

36. भारतीय इतिहास में चर्चित सन्यासी विद्रोह पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

- सन्यासी विद्रोह, 1857 की क्रान्ति से पूर्व घटित महत्वपूर्ण नागरिक विद्रोह था। इस आन्दोलन का प्रमुख कारण तीर्थ यात्रियों पर कर लगाया जाना था। सन्यासी विद्रोह बंगाल में हुआ था, बंगाल में अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध सन्यासियों,किसानोंऔर फकीरों द्वारा किया गया यह एक शक्तिशाली विद्रोह था।
- बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा 1882 में उनके द्वारा रचित उपन्यास ''आनन्दमठ'' में सन्यासी विद्रोह का उल्लेख किया गया है। मजनूमशाह, चिराग अली, भवानी पाठक, इत्यादि इस विद्रोह के प्रमुख नेता थे।
- इस आन्दोलन में हिन्दू मुस्लिम एकता देखी गयी, जिस कारण इसे फकीर आन्दोलन भी कहा जाता है।

37. भारतीय इतिहास में चर्चित संथाल विद्रोह व विद्रोह पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

सन्थाल विद्रोह (1855-56)

- सथांल समुदाय झारखण्ड–बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्रों के पर्वतीय इलाकों में रहते थे। ये कृषक जनजाति थे। जमींदारों द्वारा अत्यधिक लगान वसूलने व सम्पत्ति को जब्त कर लेने से ये समुदाय जमीदारों के विरुद्ध विद्रोह कर देता है।
- संथाल विद्रोह का नेतृत्व सिद्धू व कान्हू द्वारा किया जाता है। ब्रिटिश शासन जमीदारों का साथ निभाती है, और क्रूरता के साथ 1856 तक में कुचल देती है।

कोल विद्रोह

- कोल विद्रोह का नेतृत्व 1831 में बुद्धों भगत के द्वारा किया गया है। कोल विद्रोह मुख्यत: राँची, हजारीबाग, पलामू व अन्य क्षेत्रों (छोटा नागपुर का पठार इलाका) में फैला था, और इसका कारण अंग्रेजों द्वारा इनके साथ किया गया शोषण व इनकी जमीनों को अन्य बाहरी किसानों को सौंपना था। अंतत: क्रूरता के साथ इस आन्दोलन को कुचल दिया गया।

38. ''सहायक संधि प्रणाली'' पर चर्चा करें।

- सहायक संन्धि प्रणाली भारत में ब्रिटिश गर्वनर लार्ड वेलेजली द्वारा प्रारम्भ किया गया था। यह एक मित्रता पूर्ण (मैत्री) सन्धि थी। इस सन्धि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थी:

- अगर कोई रियासत इस संधि को अपनाती है तो कम्पनी उस रियासत की शत्रुओं से रक्षा करेगी। जिसका पूरा खर्च रियासत को उठाना होगा।
- रियासत के सभी विदेश संम्बन्धों व अन्य काम–काजों में कम्पनी की भूमिका होगी।
- रियासत को दरबार में व राजधानी में कम्पनी के कर्मचारियों व अंग्रेज रेजिडेंट की नियुक्त करनी होगी।
- यह सन्धि सर्वप्रथम हैदराबाद के निजाम (1798), फिर मैसूर, तंजौर, अवध जैसी अन्य रियासतों के साथ की गई।

39. ''व्यापगत का सिद्धांत'' क्या था?

- इस सिद्धांत का भारत में प्रयोग करने वाला गवर्नर लार्ड डलहौजी था। इस नीति को शान्तिपूर्ण विलय की नीति भी कहा जाता है।
- इस नीति के अन्तर्गत डलहौजी ने उन रियासतों, जिनका प्रतिनिधित्व कमजोर था, या रियासतें जो कर जमा नहीं करती थी। या रियासतों का वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं था, को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- वास्तविक रुप से यह एक तरह से विस्तारवादी नीति थी। इसके अर्न्तगत, सातारा, नागपुर, जैतपुर, भरतपुर, झांसी, उदयपुर, जैसी रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिया गया।

40. ''पायका विद्रोह'' की घटना पर संक्षित टिप्पणी कीजिए?

- पायका ओडिशा के परम्परागत सैनिक थे। पायका सैनिक अपनी सैन्य सेवा देकर उपहार में जमीन प्राप्त करते थे। जब बिट्रिश सरकार द्वारा उड़ीसा राज्य पर कब्जा कर लिया गया तब इसका प्रभाव पायका सैनिकों पर भी पड़ा। उनको राज्य से मिलने वाला सम्मान भी बन्द हो गया, साथ ही साथ पायका के शक्तियों में भी कमी आई। कंपनी की शोषणकारी भू–राजस्व नीतियाँ, स्थानीय मुद्रा समाप्त करना व अन्य शोषणकारी कदम पायका विद्रोह के प्रमुख कारण थे।
- पायका विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्ता जगबन्धु थे। इस विद्रोह की शुरुआत 1817 में हुई थी, हालाँकि लम्बे संघर्ष के साथ विद्रोहियों ने अंग्रेजों से अपनी कुछ मा. गों को मनवा लिया था।

41. 1857 की क्रान्ति के प्रमुख कारणों की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- 1857 का विद्रोह जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह नाम से जाना जाता है, इस विद्रोह के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित है:
- ब्रिटिश कम्पनी की आर्थिक नीतियाँ, जिससे परम्परात भारतीय उद्योग/व्यापार बन्द हो गए व सरकार की उच्च करारोपण वाली नीतियां
- कम्पनी की ''सहायक सन्धि', हड़प नीति जैसी अन्य विस्तारवादी व्यवस्थाएँ जिससे रिसासतों में जन असंतोष बढ़ा।
- अंग्रेजों की सामाजिक–धार्मिक नीतियां जैसे ईसाईकरण को बढ़ावा देना, भारतीय समाज की मान्यताओ, व रीति रिवाजों में दखल देना व ईसाई धर्म को श्रेष्ठ बताना।
- सिपाहियों में एनफील्ड बन्दूक के लिए आक्रोश

42. 1857 की क्रान्ति के प्रमुख विद्रोह केन्द्र व नेतृत्वकर्ता को बताइये।

1857 की क्रांन्ति के प्रमुख केन्द्र व इसके नेता निम्नलिखित है—

केन्द्र	नेता
दिल्ली	जनरल बख्त खाँ
कानपुर	नाना साहेब
लखनऊ	बेगम हजरत महल
बिहार	कुँवर सिंह
बरेली	खान बहादुर
ग्वालियर	तात्याटोपे
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई
मंदसौर	शाहजाहाँ हुमायूँ

43. 1857 की क्रान्ति असफल क्यो हो गयी थी? प्रमुख कारणों पर चर्चा कीजिए।

- 1857 की क्रान्ति की असफलता के प्रमुख कारण निम्नलिखित है—
- क्रान्ति में संगठित एवं एकबद्ध विचारधारा का अभाव।
- विद्रोह में सभी रियासतों व सभी वर्गो का शामिल न होना।
- क्रान्ति के लिए जरुरी संसाधनों जैसे कि शस्त्रों, संचार संसाधनों, परिवहन इत्यादि का अभाव होना।
- क्रांति के लिए जो समय निर्धारित किया गया था उससे पहले ही विद्रोह की शुरुआत हो जाना।

44. 1857 की क्रान्ति से ब्रिटिश सरकार की नीतियों पर क्या प्रभाव पड़ा? संक्षिप्त में बताइए।

- 1857 की क्रान्ति ने ब्रिट्रिश प्रशासन को गहरा आघात पहुँचाया। क्रान्ति के बाद ब्रिटिश शासन की संरचना व नीतियों में अत्यधिक बदलाव किया गया जैसे कि—

An Institute for MPPSC Examination

- 1858 का अधिनियम प्रभाव में आना और सत्ता संचालन की जिम्मेदारी कम्पनी से छीन कर ब्रिटिश क्राउन के पास जाना,
- प्रशासन का भारतीयों के सामाजिक धार्मिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति,
- सेना में यूरोपीय सैनिकों की अधिक नियुक्ति, व सर्वोच्च सैनिक पदों पर केवल यूरोपीय सैनिकों की नियुक्ति करना,
- कृषि लगानों व भूमि व्यवस्था पर नई नीति,
- हड़प नीति को बंद कर उत्तराधिकारी चुनने की मान्यता देना,
- गर्वनर का पद समाप्त कर, वायसराय की नियुक्ति करना,

45. ''बिरसा मुंडा आन्दोलन'' पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- बिरसा मुंडा आन्दोलन जनजातीय या आदिवासियों का सबसे व्यापक एवं संगठित आन्दोलन था। इस आन्दोलन का नेतृत्व आदिवासियों के भगवान स्वरुप अवतारित बिरसा मुंडा द्वारा किया गया था। यह आदिवासी समुदाय छोटा नागपुर क्षेत्र में निवास करती थी।
- इस विद्रोह का मुख्य कारण था इनकी संस्कृतियों पर अन्य संस्कृतियों द्वारा पड़ने वाला प्रभाव व इनकी जमीनों पर बाहरी कब्जा व शोषण।

बिरसा मुंडा आंदोलन के उद्देश्य थे:—

- अंग्रेजी शासन को समाप्त करना।
- स्वतंत्र मुंडा राज्य की स्थापना।

46. ''चार्ल्स वुड का डिस्पैच'' पर संक्षित टिप्पणी कीजिए।

- सन् 1854 में भारत की भावी शिक्षा के लिए एक विस्तृत योजना चार्ल्स वुड का डिस्पैच अस्तित्व में आई। भारतीय शिक्षा का मैग्ना–कार्टा की संज्ञा प्राप्त यह भारत की शिक्षा व्यवस्था के विकास से संबंधित पहला प्रस्ताव था।

सिफारिशे:–

- गांवों में मातृ/देशी भाषा में स्कूलों का विकास हो।
- स्कूल स्तर की शिक्षा का माध्यम देशी भाषा में जबकि उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो।
- शिक्षा व्यवस्था में धर्मनिरपरेक्षता का गुण हो।
- स्त्री शिक्षा पर बल।

47. दक्क्न विद्रोह की घटना को संक्षिप्त में बताइए।

- भारत के दक्क्न क्षेत्र में होने वाले विभिन्न कृषक विद्रोहो का मुख्य कारण ''रैयतवाड़ी बंदोबस्त'' के अन्तर्गत किसानों पर आरोपित किए जाने वाले भारी कर रहे थे। इस व्यवस्था के कारण किसानों को कर संबंधी परेशानियों, साहूकारों के कुचक्र में फंसने पर मजबूर होना पडा। महराष्ट्र के पूना व अहमदनगर जिलों में साहूकार किसानों का शोषण कर रहे थे। 1864 में अमेरिकी गृहयुद्ध के समाप्त होने पर कपास की कीमत में गिरावट आयी, साथ–साथ किसानों पर भू–राजस्व की नयी दर भी लागू कर दी गई। किसानों की समस्याओं व राहत उपाय पर सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया।
- 1874 में किसानों द्वारा साहूकारों के अत्याचारों के चलते महाजनों के खिलाफ सामाजिक बहिष्कार आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। महाजनों की दुकानों का बहिष्कार, मजदूरी से इंकार व अन्य सेवा देना बन्द कर दिया गया।
- इस आन्दोलन को शान्त करने के लिए सरकार ने ''दक्कन कृषक राहत अधिनियम'' पेश किया।

48. नील विद्रोह की घटना पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- अंग्रेजों के शासनकाल में किसानो के द्वारा किया गया पहला संगठित व प्रभावपूर्ण विद्रोह नील विद्रोह था। यह विद्रोह (1859–60) में हुआ था। यूरोपीय बाजारों में ''नील की बढ़ती मांग की पूर्ति के लिए बंगाल के किसानों से जबरन नील की खेती करवायी जा रही थी। नील की खेती उपजाऊ चावल के खेतों में, पैसे का लालच देकर करवायी जाती थी।
- नील की खेती, किसानों के लिए शोषणकारी नीति साबित हुई। अपहरण, जमीन पर कब्जा जैसे अन्य क्रूरतापूर्ण हथकंडे का प्रयोग किसानों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा किया जाने लगा।
- 1859 में मजिस्ट्रेट द्वारा सरकारी आदेश को समझने में गलती करने व किसानों को अपनी भूमि पर स्वतंत्र खेती करने का फरमान जारी करने के साथ नील विद्रोह की शुरुआत होती है। नील विद्रोह के प्रमुख नेता दिगम्बर विश्वास व विष्णु विश्वास थे।

- विद्रोह में समाचारपत्रों का भी प्रयोग भरपूर हुआ। दीनबंध द्वारा ''नील दर्पण'' में नील विद्रोह का मार्मिक प्रस्तुत किया गया। सरकार द्वारा ''नील आयोग'' का गठन विद्रोह खत्म करने के लिए किया गया।

49. ''पगड़ी संभाल आन्दोलन'' पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

उत्तर ''पगड़ी संभाल आन्दोलन''

- यह एक सफल किसान आन्दोलन था, जिसने वर्ष 1907 में अंग्रेजी सरकार को, अंग्रेजों द्वारा बनाए कृषि से संबंधित तीन कानूनों को रद्द करने के लिए विवश किया था।

अंग्रेजों द्वारा बनाए गए वे तीन कृषि कानून

1. पंजाब भूमि अलगाव अधिनियम 1900
2. पंजाब भूमि उपनिवेशीकरण अधिनियम 1906
3. दोआब बारी अधिनियम 1907

- इस अधिनियिम या कानूनों के चलते किसान अपनी ही भूमि के मालिक न रहकर अनुबंधक रह जाते थे। यदि किसान बिना अनुमति के खेती करते या अन्य कृषि गतिविधियां तो भूमि किसानों से छीन ली जाती थी।
- पगडी संभाल आन्दोलन का नेतृत्व (अजीत सिंह) भगतसिंह के चाचा द्वारा किया गया। क्रांतिकारियों द्वारा किसानों के हितों के लिए ''भारत माता सोसाइटी'' गठित की गई। यह आन्दोलन हिंसक आन्दोलन भी साबित हुआ। सरकारी बैंकों, डाकघरों में लूट को अंजाम दिया गया।

50. मोपला विद्रोह पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर मोपला विद्रोह

- मोपला विद्रोह केरल के मालाबार क्षेत्र में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ एक प्रतिरोध के रुप में शुरु हुआ था। हालाँकि इतिहासकारों ने इसे साम्प्रदायिक विद्रोह की भी संज्ञा दी क्योंकि, ब्रिटिश सरकार द्वारा हिन्दुओ का समर्थन प्राप्त करने के लिए बड़े पदों पर नियुक्ति की थी, और मोपला विद्रोह मुस्लिम कृषकों व हिन्दु जमींदारों के बीच शुरु हुआ था।
- मोपला विद्रोह वर्ष 1921 की घटना है। विद्रोह का कारण था— लगान की उच्च दरें, व अन्य तौर तरीके। मोपला विद्रोह को खिलाफत आन्दोलन का साथ मिला। अनेक राष्ट्रवादी नेताओं ने किसानों का समर्थन भी किया।
- हालाँकि विद्रोह जब हिसंक हुआ तो सरकार द्वारा पूरी तरह से दिसम्बर 1921 तक आन्दोलन का दमन कर दिया गया।

51. तेलगांना आन्दोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर तेलगांना आन्दोलन

- तेलगांना आन्दोलन वर्ष 1946 में कृषको द्वारा किया गया किसान आन्दोलन था। आन्ध्रप्रदेश में यह आन्दोलन साहूकारों व जमींदारों के शोषण की नीति के खिलाफ व भ्रष्ट अधिकारियों के अत्याचार के खिलाफ था। '' कम कीमत पर किसानों से गल्ला वूसली करना'' प्रमुख कारण बना।
- यह आन्दोलन आधुनिक भारत के इतिहास का सबसे बड़ा कृषक गुरिल्ला युद्ध था। तेलगांना में स्थानीय देशमुखों ने सरकार की मिली—भगत स्वरुप किसानों

की भूमि पर कब्जा करना भी प्रारंभ कर दिया था। किसानों ने एकत्रित व संगठित रुप में देशमुखों के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ किया था। हालाँकि जब हैदराबाद का विलय ''भारत संघ'' में हो जाता है तब यह आन्दोलन स्वत: समाप्त हो गया। उपलब्धि स्वरुप में देखा जाए तो, इस आन्दोलन ने भाषायी आधार पर आन्ध्रप्रदेश के गठन की भूमिका भी तैयार की, व अनेक कृषि सुधार नीति निर्माण के रास्ते तैयार किए।

52. भारत में आदिवासी/जनजाति आन्दोलनों के क्या कारण थे। कुछ प्रमुख आदिवासी आन्दोलन पर चर्चा कीजिए?

- भारत में आदिवासी आन्दोलनों या ब्रिटिश के साथ संघर्ष का मुख्य कारण ब्रिटिश शासन द्वारा उनकी विशिष्ट भौगोलिक, सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक,परम्पराओं में हस्तक्षेप किया जाना था।

आदिवासी आन्दोलन के कुछ अन्य कारण:—

- जमींदारों एवं बिचौलियों द्वारा आदिवासियों पर किया जाने वाला शोषण।
- भू—राजस्व संबंधी व प्रशासनिक नीतियाँ।
- ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां व इनका जनजातियों की संस्कृति पर प्रभाव डालना।
- अत्याचार, जबरन वसूली, जमीनों पर कब्जा करना।
- आदिवासी वनों को पूज्यनीय मानते थे, जब ब्रिटिश सरकार द्वारा वनों पर सड़क, रेल्वे, व अन्य विकास नीतियों को प्रारंभ किया तो आदिवासियों में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आक्रोश उत्पन्न हुआ।

प्रमुख जनजाति आन्दोलन

- भील विद्रोह (1825—31) नेतृत्व सेवाराम भील
- रामोसी विद्रोह (1822—1829) नेतृत्व—सरदार चित्तर सिंह
- कोल विद्रोह 1831, नेतृत्वकर्ता—बुद्धो भगत
- खासी विद्रोह 1833, नेतृत्वकर्ता— तीरत सिंह

53. वे कौन कौन से कारण थे,जिन्होने आदिवासी आन्दोलनो को प्रेरित किया

- आदिवासी विद्रोहो के प्रमुख कारण—

(अ) राजनीतिक कारण—		आन्तरिक स्वायत्ता पर अतिक्रमण
	—	जनजातीय क्षेत्रो पर अतिक्रमण
	—	जनजातीयों का शोषण
(ब) आर्थिक कारण	—	वनों पर नियंत्रण
	—	झूम खेती पर रोक लगाना
	—	भू राजस्व की वसूली
(स)सामाजिक कारण	—	जनजातीयो की सामाजिक प्रथाओं पर आघात
	—	उच्चवर्गीय समाज से दूरी
(द)धार्मिक कारण	—	ईसाई धर्म प्रचारकों की भूमिका

54. भारत के विभिन्न क्षेत्रो में हुए विभिन्न आदिवासी आन्दोलनो का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

- भारत में प्रारंभ से ही विभिन्न संस्कृति वाली जनजातियॉ निवास करती है,जिनका इतिहास में विशिष्ट स्थान है।
- क्षेत्रीय आधार पर भारत के विभिन्न भागो में विभिन्न कारणो से हुए आदिवासी आन्दोलना का वर्णन इस प्राकर है—

- बिहार के रॉची क्षेत्र में — छोटा नागपुर जनजातीय विद्रोह, मुण्डा विद्रोह, बिरसा आन्दोलन,ताना भगत आन्दोलन
- संथाल परगना क्षेत्र में — संथाल विद्रोह,भागीरथ आन्दोलन
- मध्य भारत क्षेत्र में — बस्तर जनजारीय विद्रोह,राजा मोहिनी देवी सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन
- उत्तर पूर्व क्षेत्र में — नागा विद्रोह,
- आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र में — रम्पा विद्रोह, गोंड एवं कोलम विद्रोह

55. 1857 की क्रांति के सामाजिक कारणो पर चर्चा कीजिए।

- 1857 की क्रांति के सामाजिक कारण निम्न थे—
- सामाजिक प्रथाओं पर प्रतिबंध—ब्रिटिश सत्ता ने सती —प्रथा,बाल विवाह आदि प्रचलन बंद कर उन्हें अवैध घोषित किया जबकि विधवा पुनर्विवाह न्यायसंगत घोषित किया, जिसका जनता ने विरोध किया
- अंग्रेजी शिक्षा का विरोध—भारतीय जनता ने अंग्रेजी शिक्षा का विरोध किया क्याकि जनता का ऐसा मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा सरकार उनको ईसाई बनाना चाहती है।
- पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचलन—अंग्रेजो द्वारा पाश्चात्य संस्कृति को बढावा दिया गया जिससे भारतीय संस्कृति तथा उसकी मान्यताओं पर आघात पहुचा , जिसका जनता ने विरोध किया।
- सामाजिक व्यवस्था पर आघार—अंग्रेजो द्वारा भारतीय प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाओं में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया जैसे भेदभाव,छुआछूत एवं निम्न जातियो का मंदिर प्रवेश, पर्दा प्रथा आदि मामलो में हस्तक्षेप प्रारंभ हुआ जिससे जातिगत एवं कटटरवादी लोगों में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आक्रोश पेदा हुआ।

An Institute for MPPSC Examination

56. 1857 की क्रांति के आर्थिक कारणो का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

- 1857 की क्रांति के विभिन्न आर्थिक कारण निम्न थे—
- राजस्व नीति—ब्रिटिश प्रशासन के अधिकारी भारतीय कृषकों की भूमि और उत्प. ादन के आधार पर लगान तय न कर अपनी इच्छाअनुसार तय करते थे जिसमे अभूतपूर्व बृद्वि हुई इससे किसाने में असंतोष पनपा जो क्रांति का करण बना।
- हस्तशिल्प उघोगो का पतन—दस्तकारो और शिल्पियों को लागत से कम मूल्य देकर जबरदस्ती उनके उत्पाद अंग्रेज व्यापारी खरीदने लगे जिससे बडे पैमाने पर लोग अपना पारंपरिक व्यवसाय छोडने को मजबूर हुए।
- व्यापारिक नीति—इंग्लैण्ड में भारतीय माल पर बहुत अधिक शुल्क लिया जाता था जबकि भारत में अंग्रेजी माल पर न्यूनतम शुल्क लिया जाता था,इससे स्थानीय व्यापारी बेरोजगार होते गये, तथा उनमें असंतोष बढा
- भारतीय धन का निर्गमन—अंग्रेज अधिकारियो के वेतन तथा भत्ते आदि के रूप में भारतीय धान का इंग्लैण्ड की और प्रवाह होता था। अत: भारतीय संसाधनों के निर्गमन से भारत में दरिद्रता और भुखमरी की स्थिति पैदा हाने लगी जो अंग्रेजो के विरूद्व असंतोष का कारण बनी।

57. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के योगदान पर चर्चा कीजिए।

- 1857 की क्रांति में अमर सेनानी और महान वीरांगना लक्ष्मी गाई का महत्वपूर्ण योगदान है।

- झांसी के शासक गंगाधर राव की मृत्यू पश्चात जव हडप नीति के अंतर्गत 1954 में झॉसी का विलय कंपनी में कर लिया गया तब झॉसी की रानी का क्रांतिकारी रूप सामने आया तथा उन्होने स्पष्ट कह दिया—मै अपनी झॉसी नही दउंगी।
- 1857 की क्रांति में रानी ने रानी लक्ष्मी बाई ने तात्या टोपे तथा रघुनाथ सिंह जैसे क्रांतिकारियो के सहयोग से ब्रिटिश सेना के विरूद्व विद्रोह का परचम लहराया तथा अनेक क्षेत्रो में अंग्रेज सेना के छक्के छुडाए।
- अपनी वीरता के बल पर रानी ने झॉसी पर पुन: अधिकार भी कर लिया और जून 1857 से मार्च 1958 तक दस माह की अवधि में झॉसी का प्रशासन भी कुशलतापूर्वक चलाया।
- 23 मार्च 1858 को कैप्टन हूरोज के नेतृत्व मे मे सेना ने झॉसी पर आक्रमण किया ,रानी द्वारा वीरतापूर्वक अंग्रेजो का सामना किया,तत्पश्चात 18 जून 1858 में ग्वालियर की लडाई में वे घयल हुई तथा शत्रु के हाथो पकडे जाने के बजाय उन्होने अपने प्राणो को ज्यागना उचित समझा।
- मात्र 22 वर्ष 7 माह की आयु में अपने प्राण त्यागने वाली वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक मिसाल बनीं और अनेक लोगो ने उनसे प्रेरणा प्राप्त की तथा आज भी उनका नाम आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है।

प्रयासIKSG
An Institute for MPPSC Examination

भारतीय पुनर्जागरण: राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं इसके नेतृत्वकर्ता

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

58. सी.आर.दास

- देशबन्धु के नाम से प्रसिद्व
- अलीपुर षड़यंत्र केस में अरविन्द घोष के बचाव के लिए वकालत की।
- स्वराज्य पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष रहे।

59. पब्लिक सेफ्टी बिल

- ब्रिटिश सरकार द्वारा यह बिल 1928 में कम्युनिस्ट आंदोलन को कमजोर करने के लिए लाया गया था।
- इस बिल के विरोध मे भगतसिंह आदि ने सेंट्रल असेंबली में बम फेका था।

60. डॉ.पट्टाभि सीतारमैया

- प्रसिद्व राजनेतिज्ञ एवं गांधीवादी नेता
- 1948 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे।
- 1952 में मध्यप्रदेश के प्रथम राज्यपाल बने।

61. अब्दुल गफ्फार खाँ

- सीमान्द गॉधी के नाम से प्रसिद्व गॉधीवादी नेता जिन्होन खुदाई खिदमतगार आंदोलन चलाया।
- पहले विदेशी जिसे भारत रत्न से नवाजा गया।

62. गोपालकृष्ण गोखले

- कांग्रेस के प्रसिद्व उदारवादी नेता जो महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु भी थे।
- ''भारतीय सेवक समाज'' की स्थापना की।

63. बंकिम चन्द्र चटर्जी

- कवि, साहित्यकार तथा राष्ट्रवादी नेता
- प्रसिद्ध गीत ''वन्दे मातरम्' की रचना की,जो भारत का राष्ट्रगीत बना।

64. रमेश चन्द्र दत्त

- प्रसिद्व अर्थशास्त्री,उदारवादी नेता एवं लेखक
- ''इकानामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'' पुस्तक लिखीं

65. विट्ठल भाई पटेल

- प्रसिद्व राष्ट्रवादी नेता जो 1917 में बम्बई विधानसभा के लिए चुने गये।
- केन्द्रीय विधानसभा के प्रथम भारतीय अध्यक्ष एवं बम्बई के मेयर भी चुने गये।

66. सी.राजगोपालचारी

- यह मद्रास के मुख्यमंत्री ,केन्द्र सरकार के मंत्री, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय और अन्तिम गवर्नर जनरल थे।
- इन्होने स्वतंत्र पार्टी के नाम से नयी राजनीतिज्ञ पार्टी भी बनाई।

67. महादेव गोविन्द रानडे

- गोपाल कृष्ण गोखले के राजनैतिक गुरु जिन्होने दक्कन शिक्षा समिति की स्थापना भी की थी।

- काग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक
- बम्बई विधान परिषद के सदस्य रहे।

68. एन.एम.जोशी (1875–1955)

- मजदूर नेता, जिन्होंने 1931 में अखिल भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की।
- 1909 में सोशल सर्विस लीग नामक संगठन की स्थापना भी की।

69. चौरी–चौरा

- चौरी–चौरा उत्तरप्रदेश में गोरखपुर के निकट स्थित है।
- असहयोग आन्दोलन के समय 5 फरवरी, 1922 को ग्रामीणों द्वारा कुछ पुलिसकर्मियों को जिन्दा जला दिया गया। इसे चौरी–चौरा हत्याकांड कहा जाता है।
- इसी कारण गांधीजी ने असयोग आन्दोलन को वापस ले लिया।

70. रॉलेट एक्ट

- इस एक्ट में सरकार को यह अधिकार प्राप्त था कि किसी भी भारतीय को बिना मुकदा चलाये और दंड दिये जेल में बंदकर सकती थी।
- इस एक्ट के विरोध में 6 अप्रैल 1919 को पंजाब मे हड़ताल का आह्वान किया था।

71. एनी बेसेंट

- थियासोफिकल सोसाइटी नामक संगठन की प्रमुख रही एक समाज सुधारक।
- 1916 में **होम रुल लीग** की स्थापना की ।
- 1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी।
- न्यू इंडिया एवं कॉमनवील समाचार पत्र प्रकाशित किये।

72. कल्पना दत्ता (1913–1978)

- बंगाल की प्रसिद्ध भारतीय महिला क्रांतिकारी महिला।
- इन्होने सूर्यसेन के साथ चिटगाँव शस्त्रागार लूट में भाग लिया।
- बाद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य भी बनी।

73. सचिन्द्रनाथ सान्याल (1895–1945)

- प्रसिद्र क्रांतिकारी जिन्होने हिन्दुस्तान रिपब्किन एसोसिएशन की स्थापना की।
- 'बंदी जीवन' नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी।

74. अरविन्द घोष

- प्रसिद्र गरमपंथी राष्ट्रवादी नेता
- युगान्तर धर्म तथा कर्मयोगी का सम्पादन किया।
- अलीपुर षड्यंत्र केस में मिली सजा के पश्चात् राजनीति से सन्यास लिया।

75. जतिन दास

- हिन्दुस्तान रिपल्किन ऐसोसिएशन के सदस्य।
- इन्हें लाहौर षड्यंत्र में गिरफ्तार किया गया।
- 63 दिनों तक उपवास के कारण 13 दिसम्बर, 1929 को जेल में मृत्यु हो गई।

76. श्यामजी कृष्णा वर्मा

- स्वशासन की प्राप्ति के उद्देश्य से 1905 में लंदन में इंडियन होमरुल सोसायटी स्थापित की।

- इंडियन सोशिओलॉजिस्ट नामक एक समाचार पत्र निकाला एवं लंदन में ही इंडिया हाउस की स्थापना की।

77. मास्टर दा सूर्यसेन

- बंगाल के प्रसिद्व क्रांतिकारी
- चटगॉव शस्त्रगार की घटना को अंजाम दिया जिसके कारण सूर्यसेन को 1934 में फांसी दी गई।

78. इंडियन एसोसिएशन

- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा आनन्द मोहन बोस ने 1876 में कलकत्ता में इसकी स्थापना की।
- एसोसिएशन का उद्देश्य अंग्रेजों के विरुद्ध जनमत तैयार करना, राजनैतिक जागरुकता लाना, हिन्दू–मुस्लिम एकता बढ़ाना।

79. स्वराज पार्टी

- 1923 में चितरंजन दास तथा मोतीलाल नेहरु द्वारा इस राजनैतिक दल की स्थापना की गई।
- इसका उददेश्य चुनाव पश्चात विधानसभाओं में भाग लेकर सरकार से असहयोग व विरोध करना था।

80. अनुशीलन समिति

- यह भारत का पहला गुप्त क्रांतिकारी संगठन था।
- इस समिति का गठन मिदनापुर में ज्ञानेन्द्रनाथ बसु तथा कलकत्ता में पी.मिश्रा व वारीन्द्रनाथ घोष द्वारा किया गया था।

81. अभिनव भारत

- 1904 में वी.डी.सावरकर द्वारा महाराष्ट्र में स्थापित क्रांतिकारी संगठन।
- ''नासिक षडयंत्र'' केस में मुख्य भूमिका

82. विलियम जोन्स

- ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी,जिन्होंने 1784 ई. में कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल नामक संस्था की स्थापना की।
- अभिज्ञानशाकुंतलम्' नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

83. गुरुद्वारा सुधार आन्दोलन

- यह आन्दोलन 1920 से 1925 के बीच गुरुद्वारों से भ्रष्ट महंत व ग्रंथियों को बाहर निकालने के लिए चलाया गया।
- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधन समिति की स्थापना के बाद यह आंन्दोलन समाप्त घोषित कर दिया गया।

84. खिलाफत आंदोलन

- इस आन्दोलन का प्रारंभ अली बन्धु, मौलाना आजाद, हकीम अजमल खां और हसरत मोहानी के नेतृत्व में हुआ।
- यह तुर्की के सुल्तान मुसलमानों के धर्मगुरु खलीफा का सम्मान पुन:प्राप्ति हेतु किया गया आन्दोलन था।

85. सूरत अधिवेशन

- कांग्रेस का सूरत अधिवेशन कांग्रेस को गरम दल और नरम दल के रुप मे बंटवारे के लिए प्रसिद्ध है।

- 1907 में हुए इस आयोजन में कांग्रेस स्पष्टत: दो दलों में विभक्त हो गयी।

86. रैम्से मैकडोनाल्ड

- रैम्से मैकडोनाल्ड ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे।
- 1932 ई. में उन्होंने साम्प्रदायिक घोषणा द्वारा हरिजनों के लिए पृथक निर्वाचन की व्ववस्था की,जिसके विरोध में गांधीजी ने आमरण अनशन शुरु किया।

87. हरिपुरा अधिवेशन

- हरिपुरा में 1938 में कांग्रेस अधिवेशन हुआ था।
- इसमें सुभाषचन्द्र बोस को अध्यक्ष बनाया गया था।

88. साम्प्रदायिक घोषणा

- 17 अगस्त, 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्से मैकडोनाल्ड द्वारा की गयी घोषणा।
- इस घोषणा में मुसलमानों तथा ईसाईयों के अतिरिक्त हरिजनो के साम्प्रदायिक प्रति. निधित्व का भी समर्थन किया गया था।
- विरोध होने पर इसे 20 सितम्बर 1932 को वापस ले लिया गया था।

89. हंटर कमेटी

- 1919 में जलियावाला बांग हत्याकाण्ड की जाँच के लिए गणित कमेटी।
- कमेटी ने पंजाब के गवर्नर डायर को निर्दोष करार दिया।

90. दांडी यात्रा

- 12 मार्च 1930 से 5 अप्रैल 1930 तक गांधीजी द्वारा की गई ऐतिहासिक यात्रा।
- गांधीजी के 78 अनुयायी शामिल।
- 6 अप्रैल को नमक कानून के उल्लंघन के साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरु हुआ।

An Institute for MPPSC Examination

91. काकोरी कांड

- हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन द्वारा 9 अगस्त 1925 को उत्तर रेल्वे के लखनऊ सहारनुपर संभाग के काकोरी नामक स्थान पर 8 डाउन ट्रेन पर डकैती डालकर सरकारी खजाने को लूटा। यह घटना काकोरी कांड के नाम से प्रसिद्ध हुई।

92. फारवर्ड ब्लॉक

- 1930 में सुभाष चन्द्र बोस द्वारा गठित।
- इसका उद्देश्य साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों को एकत्र करना और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करना था।

93. लखनऊ पैक्ट

- 1916 में लखनऊ में हुए कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन जिसकी अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार ने किया था।
- लखनऊ अधिवेशन की दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुयी, उग्रवादियों का पुन: कांग्रेस में प्रवेश तथा कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच ऐतिहासिक लखनऊ समझौता।

94. अकाली आन्दोलन

- पंजाब के गुरुद्वारों में सुधार हेतु 1920–25 में चलाया गया आंदोलन
- इस आन्दोलन के फलस्वरुप सिक्ख गुरुद्वारा अधिनियम 1925 पारित हुआ।

95. वायकोम सत्याग्रह

- टी.के.माधवन तथा के.केलप्पन द्वारा 1924–25 में अस्पृश्यता के विरुद्ध त्रावणकोर,केरल में चलाया गया आंदोलन।
- यह आंदोलन अछूतों को मंदिरों में प्रवेश को लेकर था।

96. हंटर आयोग

- अंग्रेजी सरकार ने 1882 में डब्ल्यू.डब्ल्यू हन्टर की अध्यक्षता में शिक्षा के क्षेत्र में 1854 के पश्चात् हुई प्रगति की समीक्षा करने के लिए इस आयोग का गठन किय था

97. पंडिता रमाबाई

- महिला समाज सुधारक
- महिलाओं की शिक्षा के लिए शारदा सदन की स्थापना की।
- बेसहारा महिलाओं को आश्रय देने के लिए 'मुक्ति सदन'' तथा पतित महिलाओं के उद्धार के लिए कृपा सदन की स्थापना की।

98. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

- भारत के प्रमुख समाज सुधारक जिन्होंने विधवा पुनर्विवाह की आवाज उठायी और बहुविवाह का विरोध किया।
- महिला शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

99. केशवचन्द्र सेन

- भारतीय प्रसिद्व समाज सुधारक।
- ब्रह्मसमाज के आचार्य नियुक्त किये गये तथा 1867 में ब्रह्म समाज में वैचारिक मतभेद के चलते 'आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- इनके प्रयासो से महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज तथा दक्षिण भारत में देवसमाज की स्थापना हुई।

An Institute for MPPSC Examination

100. ई.बी.रामास्वामी नायंकर

- दक्षिण भारत के प्रसिद्व समाज सुधारक।
- निम्न जातियों और द्रविड़ आन्दोलन के प्रमुख नेता।
- 1924 में निम्न जातियों के हितों की रक्षा के लिए आत्म सम्मान आन्दोलन चलाया।

101. आत्मीय सभा

- 1815 ई. में राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित धार्मिक संस्था
- इसका प्रमुख उद्देश्य एकेश्वरवादी मत का प्रचार करना था।
- बाद में ब्रहम समाज के रुप में संगठित।

102. तत्व बोधिनी सभा

- 1839 में कलकत्ता में देवेन्द्रनाथ टैगार, द्वारा स्थापित।
- इसका मुख्य उद्देश्य धार्मि सत्य की खोज तथा उपनिषदों के ज्ञान का प्रचार प्रसार करना था।

103. श्री नारायण गुरु

- केरल के प्रख्यात सामाजिक धार्मिक सुधारक जिन्होने निम्नजातियों को सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने के लिए अनवरत संघर्ष किया।
- इनका प्रसिद्व नारा एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर था।'

104. सत्यशोधक आन्दोलन

- 1873 में ज्योतिबा फुले ने समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को सामाजिक न्याय दिलाने के उद्देश्य से इस आन्दोलन का सूत्रपात किया।
- समाज कल्याण हेतु सभी को अनाथालय तथा शिक्षालया की स्थापना इस आन्दोलन के तहत की गई।

105. पूना सार्वजनिक सभा

- इस सभा की स्थापना 1867 ई. में पूना में हुई ,जिसका उद्देश्य जनसाधारण और सरकार के बीच मध्यस्थता करना था।
- महादेव गोविन्द रानाडे, आत्माराम पांडुरंग आदि इसके प्रमुख नेता थे।

106. वेद समाज

- 1864 मद्रास में स्थापित।
- इसकी स्थापना श्रीधरलू नायडू द्वारा की गयी।
- ब्रम्ह समाज की दक्षिण भारत में विस्तार।
- सामाजिक—धार्मिक सुधारों का समर्थन किया

107. प्रार्थना समाज

- 1867 में बम्बई में स्थापित।
- इसकी स्थापना एम.जी.रानाडेत्र, आत्माराम पांडुरंग आदि ने की।
- जातिप्रथा एवं बालविवाह का विरोध, विधवा विवाह एवं स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

108. गुरुमाथुर सत्याग्रह

- दलितों और पिछड़ो के मंदिर प्रवेश के लिए केरल में चलाया गया आन्दोलन।
- के.केलप्पन, पी.कृष्ण पिल्लै, ए.के.गोपालन ने नेतृत्व प्रदान किया।

109. जस्टिस पार्टी

- सी.एन.मुदलियार, पी.त्याग राज टी.एम. आदि द्वारा स्थापित।
- 1916 में मद्रास प्रेसीडेन्सी में स्थापित एक राजनीतिक दल।
- इसका उद्देश्य ब्राम्हणों के वर्चस्व को समाप्त करना था।

110. खुदीराम बोस

- 1908 ई. में सेशन जज किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंकने के कारण श्रेणी रेल्वे स्टेशन पर गिरफ्तार हुए एक महान क्रांतिकारी।
- 11 अगस्त, 1908 ई. को फाँसी दे दी गई।

111. राजेन्द्र लाहिडी

- प्रसिद्र क्रांतिकारी जो दक्षिणेश्वर बम काण्ड तथा काकोरी डाक गाड़ी डकैती काण्ड के सिलसिले में गिरफ्तार हुये।
- 17 दिसम्बर, 1927 ई. को गोण्डा की जेल में इन्हें फाँसी दे दी गई।

112. रामप्रसाद बिस्मिल

- मैनपुरी षड़यंत्र एवं काकोरी कांड का योजनाकार, इसी कांड में बंदी बनाया गया।
- 19 दिसम्बर, 1927 को गोरखपुर जेल में फाँसी दे दी गई।

113. अशफाकउल्ला खाँ

- 19 अगस्त, 1925 ई. को काकोरी डाकगाड़ी डकैती केस के अभियोग में बंदी बनाया गया।
- 19 दिसम्बर, 1927 ई. को फैजाबाद जेल में फाँसी दे दी गई।

114. ऊधम सिंह

- 13 मार्च, 1940 ई. को सर माइकल ओ.डायर को **कैक्सटन हॉल, लंदन** में गोली मारने के कारण गिरफ्तार हुए तथा फॉसी दी गई।

115. भगतसिंह

- सॉण्डर्स की हत्या तथा 8 अप्रैल, 1929 ई. को केन्द्रीय विधान सभा जो आज लोकसभा है) में बम फेंकने के सिलसिले में गिरफ्तारी प्रसिद्व क्रांतिकारी।
- सॉण्डर्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई तथा 23 मार्च, 1931 ई.को फाँसी पर चढ़कर शहीद हो गये।

116. सुखदेव

- सॉण्डर्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई। 15 अप्रैल 1929 ई. को गिरफ्तार हुए।
- 23 मार्च 1931 ई. को भगतसिंह के साथ फाँसी दे दी गई।

117. राजगुरु

- 17 दिसम्बर, 1928 ई. को सॉण्डर्स की हत्या में भाग लेने के कारण 30 दिसम्बर 1929 ई. को पूना में एक मोटर गैराज में गिरफ्तार हुए।
- 23 मार्च 1931 ई को केन्द्रीय जेल लाहौर में भगतसिंह और सुखदेव के साथ फाँसी दे दी गई।

118. बटुकेश्वर दत्त

- भारतीय क्रांतिकारी जो भगतसिंह के साथ केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने के आरोप में गिरफ्तार हुए।
- इन्हें आजीवन कारावास का दंड मिला।

119. चन्द्रशेखर आजाद

- काकोरी डाकगाड़ी डकैती केस के मुख्य अभियुक्त व अंग्रेजी सरकार ने इन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए तीस हजार रुपये पुरस्कार की घोषणा की।
- 27 फरवरी, 1931 ई. को अल्फ्रेड पार्क (इलाहबाद) में शहीद हुए।

120. मास्टर अमीचन्द

- दिल्ली षडयंत्र के प्रमुख क्रांन्तिकारी अमीचन्द फरवरी 1914 ई. में वायसराय लॉर्ड हार्डिग की हत्या करने के आरोप में बन्दी बनाये गये।
- 8 मई, 1915 ई को चार साथियों के साथ इन्हें फाँसी दे दी गई।

121. अवध बिहारी बोस

- दिल्ली षडयंत्र केस एवं लाहौर बम काण्ड के आरोप में फरवरी 1914 ई. में इन्हें बंदी बनाया गया।
- 8 मई 1915 ई. को फाँसी दे दी गई।

122. दामोदर चापेकर

- 22 जून 1897 ई. को प्लेग कमिश्नर रैण्ड और लेफ्टिनेंट एयर्स्ट की हत्या के सिल. सिले में अपने भाइयों के साथ गिरफ्तार हुए।

- 18 अप्रैल 1898 ई. को फाँसी के तख्ते पर चढ़कर शहीद हो गये। इनके भाई बालकृष्ण चापेकर को 12 मई 1899 ई. को तथा वासुदेव चापेकर को ८ मई, 1899 ई. को फाँसी पर लटका दिया गया।

123. मदनलाल ढींगरा

- 1 जुलाई 1909 ई. में कर्नल विलियम कर्जन वाइली की हत्या करने के कारण गिरफ्तार हुए।
- (इंडिया ऑफिस) में 16 अगस्त 1909 को फाँसी दी गई।

124. वासुदेव बलवंत फड़के

- एक सशस्त्र सेना बनाकर ब्रिटिश सरकार का विरोध करने के कारण 21 जुलाई, 1879 को गिरफ्तार हुए।
- काला पानी की सजा के सिलसिले में अदन में आमरण अनशन करके 17 फरवरी 1883 को प्राण त्याग दिये।

125. करतार सिंह सराबा

- गदर पार्टी के कार्यकर्ता तथा लाहौर सैनिक षडयंत्र के नेता की हैसियत से गिरफ्तार किए गए।
- 16 नवम्बर 1915 को फांसी की सजा दी गई।

126. सुभाष चन्द्र बोस

- 21 अक्टूबर 1843 ई को सिंगापुर में आजाद भारत के अस्थायी सरकार की स्थापना की घोषणा की तथा जापानी सेना की सहायता से अडंमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर अधिकार करते हुए, 1944 में भारतीय सीमा के इम्फाल क्षेत्र में प्रवेश किया।
- 18 अगस्त 1945 को वायुयान दुर्घटना में इनकी मृत्यु हुई,जिसकी पुष्टि अभी तक नही हुई है।

127. विष्णु गनेश पिंगल

- 23 मार्च, 1915 को विस्फोटक बमों के साथ गिरफ्तार किए गए थे।
- एक महान् स्वतंत्रता क्रांतिकारी।
- 17 नवम्बर 1915 को इन्हें फांसी दी गयी।

128. सूर्यसेन (मास्टर दा)

- चटगांव शस्त्रागार लूट के प्रमुख नेता तथा एक महान स्वतंत्रता क्रांतिकारी।
- 18 अप्रैल 1930 में चटगाँव स्थित ब्रिटिश शस्त्रागार पर आक्रमण में भाग लेने के कारण गिरफ्तार हुए।
- 12 जनवरी 1934 को इन्हें फांसी पर लटका दिया गया।

129. लाला लाजपत राय

- साइमन कमीशन का विरोध करने के कारण पुलिस की लाठी चार्ज का शिकार हुए।
- इन्हें शेर–ए–पंजाब की संज्ञा प्राप्त है।
- लाठी प्रहार के कारण 17 नवबंर 1928 को इनका देहांत हुआ।
- भारत की स्वतंत्रता की लडाई में अभूतपूर्व योगदान।

130. हरकिशन

- 23 दिसबंर 1930 को पंजाब के गवर्नर पर गोली चलाने के आरोप में गिरफ्तार हुए।
- 9 जून 1931 को इन्हें फांसी दे दी गई।

131. जगन्नाथ शिंदे

- सोलापुर थाने पर हुए हमले का आरोप लगाकर इन्हें बंदी बनाया गया।
- 12 जनवरी 1931 को इन्हें फांसी दे दी गयी।

132. असित भट्टाचार्य

- 13 मार्च 1933 ई. को हबीबगंज में डाक डकैती तथा हत्या के अन्य मामले के सिलसिले में गिरफ्तार किए गए।
- 2 जुलाई 1934 को सिलहट जेल में इन्हें फांसी दे दी गई।

133. चापेकर बंधु कौन थे?

- चापेकर बन्धु पूना के दो ब्राहण दोमोदर व बालकृष्ण थ, जिन्हें प्लेग समिति के अध्यक्ष रैण्ड व लेफटीनेण्ट एर्यस्ट की हत्या (1897 ई) के आरोप में फॉसी की सजा दी गई।

134. गदर पार्टी

- गदर पार्टी का गठन 1913 में संयुक्त राज्य अमेरिका के सेन फ्रांसिस्कों नगर में लाला हरदयाल द्वारा किया गया था।
- इस पार्टी का उददेश्य भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्रदान करना था।

135. चटगॉव आर्मरी रेड

- बंगाल के क्रांतिकारी सूर्यसेन जिन्हे मास्टर दा के नाम से भी जाना जाता था, द्वारा 1930 ई. मे चटगॉव आर्मरी रेड की घटना को अंजाम दिया गया था।
- कांतिकारी सूर्यसेन को फॉसी की सजा दी गई।

5 □□ों □□प्रश्नोत्तर

136. वहाबी आन्दोलन को संक्षेप में समझाइए?

- वहाबी आन्दोलन को सैयद अहमद बरेलवी द्वारा शुरु किया गया था। वहाबी आन्दा. ेलन का प्रारम्भिक लक्ष्य इस्लाम धर्म में सुधार लाना था। लेकिन तत्कालीन परिस्थितियों के चलते यह राजनैतिक आन्दोलन में परिवर्तित हो गया । एनायत अली, विलायत अली, तीतूमीर और दूदू मियां इस आन्दोलन के नेतृत्वकर्त्ता थे। पटना आन्दा. ेलन का केन्द्र बिन्दु था। वहाबी आन्दोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य व अन्य शोषक वर्ग, के शोषणकारी नीतियें का विरोध किया।

137. भारतीय समाज में हुए सुधार आन्दोलनों को प्रेरित करने वाले कारकों की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- सुधारवादी आन्दोलनों को प्रेरित करने वाले कारक निम्नलिखित है—
- तर्कवादी अवधारणा का विकास।
- शिक्षा का बढ़ता स्तर एवं वैश्विक ज्ञान, संबंधी जागरुकता का विकास।
- भारत में उपनिवेशी शासन की उपस्थिति।
- पाश्चात्य आधुनिक व वैज्ञानिक तर्को तथा संस्कृति का प्रभाव।
- भारतीय समाज में फैली कुरीतियाँ जैसे—सतीप्रथा, शिशुवध, विधवास्त्री को लेकर मान्यता, अन्य शोषणात्मक प्रवृत्ति।
- शिक्षित भारतीयों में लोकतंत्र व राष्ट्रवाद की भावना का विकास।

138. ब्रम्ह्य समाज के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- ब्रम्ह्य समाज की स्थापना, 1828 में स्थापित ब्रम्ह्य सभा के परिवर्तित नाम के तहत राजाराम मोहन राय द्वारा की गई थी। ब्रम्ह्य समाज अपने निर्धारित मूल्यों के तहत समाज की बुराइयों को दूर करने व तार्किक अवधारणाओं के विकास का कार्य किया।

प्रमुख उद्देश्य

- मूर्तिपूजा का विरोध, एकेश्वरवाद
- सती प्रथा का विरोध
- बाल विवाह का विरोध व विधवा पुर्नविवाह पर बल
- छूआछूत, अंधविश्वास, भेदभाव को रोकना
- इत्यादि।

139. राजाराममोहन राय के व्यक्तित्व व सामाजिक कृत्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- राजाराम मोहन राय को प्राय: भारतीय पुर्नजागरण का जनक और आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। राजाराम मोहन राय ने ब्रम्ह्य समाज की स्थापना, आत्मीय सभा,'' प्रीसेप्स ऑफ जीसस'' के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों, रुढ़िवादी मान्यताओं अतार्किक परम्पराओं पर प्रहार किया। राजाराममोहन राय पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक थे। 1829 में सती प्रथा पर कानून बनने व सतीप्रथा के अंत के लिए इन्होने अथक सफल प्रयास किया। इन्होंने अपने कार्यो में मानवीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

140. आधुनिक भारतीय समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए किए गए प्रयासों को बताइए।

- समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति को सुधारने व उन्हें समाज में सम्मानित जीवन जीने के लिए अनेक सुधावादियों द्वारा प्रयास किया गया। ब्रम्ह्य समाज के जरिए राजाराममोहन राय द्वारा सतीप्रथा रोकने व विधवा पुर्नविवाह के लिए अथकक प्रयास किए। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अथक प्रयास से 1856 में ''हिन्दू विधवा पुर्नविवाह अधिनियम'' पारित किया गया। इसी दिशा में विष्णु शास्त्री पंडित जी द्वारा ''विधवा पुर्नविवाह एसोसिएशन 1850''की स्थापना की गई थी।

141. दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज व इसके सिद्धांतों पर संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

- आर्य समाज की स्थापना दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में की गई। आर्य समाज सुधारवादी आन्दोलन था, इसने हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने अपने विचार एवं चिंतन का प्रकाशन किया। हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए शुद्धि आन्दोलन चलाया। दयानंद सरस्वती ने प्रसिद्ध नारा **''वेदो की ओर लौटो''** दिया था।
- आर्य समाज के प्रमुख सिद्धान्त:
- वेदों के आधार पर मंत्र—पाठ
- स्त्रियों की शिक्षा को बढ़ावा।
- बाल विवाह व बहुविवाह का विरोध
- मूर्तिपूजा का खंडन
- एक ईश्वर की उपासना
- इत्यादि

142. थियोसोफिकल आन्दोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

- सन् 1875 में अमेरिका में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की गई थी। इस आन्दोलन की शुरुआत मैडम एच.पी.ब्लावैस्की एवं कर्नल एम.एस. अलकाट ने की। ये दोनों भारतीय संस्कृति से गहरे प्रभावित थे। सन् 1882 में इन्होनें सोसायटी का मुख्यालय मद्रास के निकट अडयार स्थान में परिवर्तित कर दिया। इस सोसायटी के अनुयायी ध्यान, योग, चिंतन, और साथ—साथ हिन्दू धर्म के विचारों, पुर्नजन्म व कर्मवाद पर विश्वास करते थे। सोसायटी ने मुख्यत: हिन्दू धर्म की प्राचीन विरासत एवं पहचान का पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया। इसी सोसायटी की अध्यक्ष के रुप में एनीबेसेंट ने कार्य किया, व तत्कालीन परिस्थितियों से लड़ने व भारतीयों को संगठित करने कार्य किया।

143. तत्वबोधिनी सभा तथा साधारण ब्रम्ह्य समाज पर संक्षिप्त में चर्चा कीजिए।

तत्वबोधिनी सभा

- तत्वबोधिनी सभा का गठन 1839 में देवेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा किया गया था। साथ ही साथ बंगाली भाषा में एक पत्रिका '' तत्वबोधिनी पत्रिका'' का प्रकाशन भी किया जाता था।
- तत्वबोधिनी सभा तत्कालीन समय में फैली अव्यवस्थाओं से निपटने, व प्राचीन भारतीय सभ्यताओं के आदर्शो को संजोए रखने का कार्य किया।

साधारण ब्रम्ह्य समाज

- ब्रम्ह्य समाज के सिद्वान्तों में बालविवाह का विरोध करना शामिल था, लेकिन ब्रम्ह्य समाज से जुड़े केशवचन्द्र सेन ने, ब्रम्ह्य समाज के नियमों के विपरीत अपनी 13 वर्षीय पुत्री का विवाह बिहार के राजा के साथ करवा दिया था। जिसके कारण ब्रम्ह्य समाज से निष्कासित होकर उन्होंने 1878 में साधारण ब्रम्ह्य समाज की स्थापना की।

144. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना व इसके प्रारंभिक उद्देश्यों पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना वर्ष 1885 में ए.ओ.ह्यूम के सहयोग स्वरुप हुई थी।
- कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की संगठित रुप से धीमी शुरुआत हुई थी। इसके प्रारम्भिक लक्ष्य व उद्देश्य:
- लोकतांत्रिक व संगठित रुप से आन्दोलन चलाना।
- लोगों में राष्ट्रवाद की भावना जगाना।
- लोगों को एकत्र करना व उपनिवेशी शासन की नीतियों से अवगत कराना।
- बुनियादी जरुरतों की पूर्ति हेतु उपनिवेशी सरकार से मांग करना।
- इत्यादि।

An Institute for MPPSC Examination

145. बंगाल विभाजन की घटना पर प्रकाश डालते हुए बंगाल विभाजन के कारणों की चर्चा कीजिए।

- बंगाल विभाजन 1905 में लार्ड कर्जन द्वारा किया गया था। लार्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन का कारण यह बताया कि बंगाल, भौगोलिक, व जनसंख्या की दृष्टि से एक बड़ा क्षेत्र है, और यहाँ पर समूचे रुप से प्रशासन करना सम्भव नहीं है।
- हालाँकि बंगाल विभाजन का वास्तविक उद्देश्य लार्ड कर्जन का यह था कि बंगाल में तेजी से प्रसारित होती राष्ट्रवादी भावना को कम करना, व हिन्दु–मुस्लिम की एकता को कमजोर कर उन्हें अलग–अलग करना। गोखले, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, के.के.मित्रा व अन्य बंगाल विभाजन के प्रबल विरोधी नेता थे।

146. बंगाल विभाजन के दौरान भारतीयों द्वारा किए गए आन्दोलन व अन्य विरोधी प्रयासों की चर्चा करिए।

- लार्ड कर्जन द्वारा किए गए बंगाल विभाजन का विरोध राष्ट्रवादियों द्वारा जमकर किया गया। स्वदेशी व बहिष्कार आन्दोलन बंगाल–विभाजन विरोधी प्रमुख आन्दोलन थे। हितवादी, संजीवनी, एवं बंगाली जैसे पत्रों के माध्यम से बंगाल विभाजन का विरोध किया गया। बंगाल विभाजन के लागू होने पर लोगों ने विरोध में जुलूस निक. ालना, गंगा स्नान, व्रत रखना, इत्यादि व साथ ही साथ संगठित आन्दोलन के जरिए विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार व विदेशी वस्तुओ की होली जलाना, सरकारी सेवाओं का बहिष्कार, तिलक का गणपति व शिवाजी उत्सव, बंगाल विभाजन के विरोध की प्रमुख पहले थी।

147. स्वदेशी आन्दोलन क्या था? स्वदेशी आन्दोलन के योगदानों पर चर्चा कीजिए?

- बंगाल विभाजन के विरोधस्वरुप कलकत्ता के टाउनहाल में आयोजित सभा में वर्ष 1905 में स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया था। वर्ष 1905–1908 तक बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन पर उग्रवादी का प्रमुख प्रभाव रहा।
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, देशी अपनाने पर जोर, सरकारी सेवाओं का बहिष्कार, स्वंयसेवी संगठनों का निर्माण यह प्रमुख कृत्य स्वदेशी आन्दोलन से सम्बन्धित है।

प्रभाव

- विदेशी आयात में गिरावट,
- उग्रराष्ट्रवाद का विकास होना,
- स्वदेशी उद्योगों की वृद्धि,
- राष्ट्रवादी समितियों का गठन,
- इत्यादि

148. स्वदेशी आन्दोलन की असफलता के कारणों की चर्चा कीजिए

- 1905 में शुरु हुआ स्वदेशी आन्दोलन 1908 आते आते ठंडा पड़ गया। इसके कई कारण थे–
- स्वदेशी आन्दोलन समाज के सभी वर्गो में अपनी पैठ नहीं बना सका।
- आन्दोलन का प्रभाव ज्यादातर शहरों व समाज के उच्च वर्गो तक सीमित रहा।
- कांग्रेस नेताओं के मध्य आन्तरिक झगड़े स्वदेशी आन्दोलन को दुर्बल बना दिया।
- ब्रिटिश सरकार का स्वदेशी आन्दोलन को कठोरता के साथ दबाने का प्रयास।
- आगे चलकर स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्वहीन होना।

An Institute for MPPSC Examination

149. होमरुल लीग आन्दोलन से आप क्या समझते हैं?

- होमरुल लीग आन्दोलन भारत में एनी बेसेंट और बालगंगाधर तिलक द्वारा शुरु किया गया था। इसका उद्देश्य भारतीय जनमानस को होमरुल अर्थात् स्वशासन के लिए जागृत करना था, तथा स्वशासन क्या होता है, से परिचित करवाना था।

तिलक की होमरुल लीग:

- बाल गंगाधर तिलक ने अपनी होमरुल लीग की स्थापना अप्रैल 1916 में की थी। भाषायी प्रांतों की स्थापना, तथा स्वराज की प्राप्ति, लीग की प्रमुख उद्देश्य थे।

बेसेंट की होमरुल :

- एनी बेसेंट ने 1916 में मद्रास में होमरुल लीग की स्थापना की थी। जार्ज अंरुडेल, बेसेंट की लीग का सचिव नियुक्ति किए गए थे।

150. आधुनिक भारत के इतिहास में वर्णित लखनऊ समझौता क्या है?

लखनऊ समझौता

- सन् 1916 में अंबिका चरण मजुमदार की अध्यक्षता में लखनऊ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। इसमें गरमदल व नरम दल के मध्य समझौता हो जाता है। साथ–साथ कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य समझौता सम्पन्न होता है। जिसे लखनऊ समझौता कहा जाता है।

लखनऊ समझौता के प्रावधान

- कांग्रेस द्वारा मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचन प्रणाली पर सहमति जताई गई।

- केन्द्रीय व्यवस्थापिका में मुसलमानों के लिए आरक्षण का प्रावधान किया गया।
- कांग्रेस की उत्तरदायी शासन की मांग पर लीग समर्थन करें।

151. उदारवादियों व उग्रवादियों की विचारधारा में अन्त स्पष्ट कीजिए?

उदारवादियों व उग्रवादियों की विचारधारा में अन्तर निम्नलिखित है:

लखनऊ समझौता के प्रावधान:

- उदारवादियों का ब्रिटिश सरकार की न्यायिक प्रणाली या न्यायप्रियता में विश्वास था। ब्रिटिश ताज के प्रतिनिष्ठा की भावना व हमेशा संवैधानिक दायरे में रहकर ही उन्होंने अपनी माँगों को सरकार के सामने रखा।
- उदारवादी विचारधारा ने अहिंसात्मक आन्दोलन व शान्तिस्वरुप आन्दोलन का अनुसरण किया।
- उदारवादी विचारधारा के लोगों का मानना था कि भारत के ब्रिटेन के साथ संबंध भारत के हित के लिए सही है।

उग्रवादी विचारधारा:

- उग्रवादी विचारधारा का मानना था कि ब्रिटेन के साथ भारत के संबंध, भारत के लिए आर्थिक, राजनीतिक शोषण के कारण है। उग्रवादियों का ब्रिटिश सरकार पर विश्वास नहीं था और न ही ब्रिटिश ताज से निष्ठा। उग्रवादियों ने अपनी मांगों को पूरा करव. ाने के लिए असंवैधानिक रास्तों का भी अनुसरण किया। भारतीय दुर्दशा के लिए ब्रिटिश सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए स्वराज्य की माँग की।

152. होमरुल लीग आन्दोलन का भारतीय इतिहास में क्या योगदान रहा है?

- होमरुल लीग आन्दोलन का वास्तविक उद्देश्य, भारतीयों को ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों से मुक्ति दिलाकर, स्वशासन से परिचित करवाना था।
- एनी बेसेंट, तिलक दोनों के द्वारा होमरुल लीग शुरु किया गया था।
- हालाँकि ब्रिटिश सरकार ने लीग को कठोरता के साथ बन्द करवाना चाहा व इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने अनेक लीग से जुड़े नेताओं को बन्दी बना लिया था। फिर भी लीग ने स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण छाप छोड़ा।

लीग की उपलब्धियाँ

- लीग के सिद्धांन्तों से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को नई दिशा मिली।
- मांटेग्यू की घोषणा।
- लीग ने लखनऊ अधिवेशन में गरमदल–नरमदल के मध्य समझौते में भूमिका निभाई।
- स्वशासन व आधुनिक विचारों से जन–सामान्य का परिचय करवाना।

153. गाँधीजी के द्वारा शुरु किया गया ''पंजीकरण प्रमाणपत्र के विरुद्ध सत्याग्रह'' क्या था?

- पंजीकरण प्रमाणपत्र के विरुद्ध सत्याग्रह की शुरुआत वर्ष 1906 में गांधीजी के द्वारा दक्षिण अफ्रीका में की गई थी।
- इस सत्याग्रह का कारण था दक्षिण अफ्रीका की सरकार का भेदभाव वाला कानून।
- कानून के अर्न्तगत यह अनिवार्य किया गया कि दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों को अंगूठा निशान लगा पंजीकरण प्रमाणपत्र हर समय पास रखना होगा। गांधीजी ने इस भेदभावपूर्ण कानून का विरोध किया तथा अहिंसात्मक प्रतिरोध सभा का गठन किया। इस विरोध स्वरुप उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

154. चम्पारण सत्यागह की घटना का क्या कारण था? संक्षिप्त में समझाइए।

- चम्पारण की घटना बिहार राज्य की थी। इस घटना या चम्पारण सत्याग्रह का कारण था तिनकठिया प्रणाली। अंग्रेजों के द्वारा किसानों से अनुबंध तौर पर भूमि के 3/20 भाग में नील की खेती अनिवार्य कराई जाती थी। 19 वीं सदी के अंत में यूरोपीय देशों में रासायनिक रंगों के अविष्कार हो जाने से भारतीय किसानों को नुकसान हुआ। साथ–ही–साथ गोरे बागान मालिको द्वारा उत्पादित नील की कम दाम पर खरीदी व किसानों पर अधिक कर लगाना, चम्पारण सत्याग्रह की घटना का प्रमुख कारण था।

155. गांधीजी के चम्पारण सत्याग्रह पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- चम्पारण सत्याग्रह गांधीजी का भारत में पहला आन्दोलन था। चम्पारण सत्याग्रह जो कि गांधीजी के द्वारा वर्ष 1917 में शुरु किया गया था, का तत्कालीन कारण था, गोरे बागान मालिको द्वारा किसानों का शोषण व ''तिनकठिया प्रणाली।'' चम्पारण घटना से जुड़े आन्दोलनकारी राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी को चम्पारण बुलाया था। गांधीजी ने मामले की जाँच की अंग्रेजों ने शुरुआत में गांधीजी को मामले से दूर रहने को कहा लेकिन गांधीजी के आन्दोलन स्वरुप सरकार को जाँच कमेटी नियुक्ति करनी पड़ी।
- जिसके सदस्य गांधीजी भी थे। अन्ततः सरकार द्वारा विवश होकर गांधीजी व किसानों की मांग सुनी गई व तिनकठिया प्रणाली बन्द की गई व अवैध वसूली का 25% कर किसानों को वापिस किया गया।

156. अहमदाबाद मिल हड़ताल की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

- अहमदाबाद मिल हड़ताल पर गांधीजी का आन्दोलन चम्पारण सत्याग्रह विजय के पश्चात् शुरु किया गया था। यह मामला मिल मालिको और मजदूरों में विवादित प्लेग बोनस को लेकर शुरु हुआ था। मजदूरों द्वारा 50% बोनस की मांग की गई थी जबकि मिल मालिक 20% पर राजी थे। गांधीजी ने मजदूरो का समर्थन करते हुए 35% बोनस की माँग की। गांधीजी द्वारा अहमदाबाद मिल हड़ताल आन्दोलन के अन्तर्गत प्रथम भूख हड़ताल आन्दोलन शुरु किया गया। आन्दोलन से विवश होकर मजदूरों की माँग पर बोनस देने के लिए मिल मालिक राजी हो गए। अंततः गांधीजी का अहमदाबाद मिल हड़ताल आन्दोलन सफलतापूर्वक सफल हुआ।

157. खेड़ा सत्याग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी करिए?

- खेड़ा सत्याग्रह गुजरात के खेड़ा जिले से सम्बन्धित है। मामला था ब्रिटिश सरकार की किसानो से सम्बन्धित शोषणकारी लगान व्यवस्था। सरकार द्वारा राजस्व नीति के तहत फसल खराब हो जाने पर लगान माफ करने का नियम बनाया गया था। खेड़ा में किसानों की फसल खराब हो जाने पर सरकार ने लगान माफ नहीं किया।
- गांधीजी ने किसानों को लगान न अदा करने के लिए कहा, व इस कानून के खिलाफ आन्दोलन शुरु किया। यह आन्दोलन प्रायः गांधीजी का प्रथम असहयोग आन्दोलन था।
- खेडा सत्याग्रह सफल रहा, सरकार को विवश होकर मजबूर किसानों का लगान माफ करना पड़ा।

158. रौलेक्ट एक्ट व रौलेक्ट सत्याग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

- रौलेक्ट एक्ट वर्ष 1919 में ब्रिटिश सरकार द्वारा लाया गया था। यह इतिहास में काला कानून के नाम से जाना जाता है। इस एक्ट के तहत एक विशेष न्यायालय स्थापित किया गया, जो ऐसे साक्ष्यों को भी मान्यताा दे सकता था, जो कानूनी मान्य न हो। अर्थात् बिना सबूतों के मुकदमा दायर किया जा सकता था।

- इस निर्णय के खिलाफ किसी अन्य न्यायालय में सुनवाई का प्रावधान भी नही किया गया था। यह कानून राष्ट्रीयता व क्रांतिकारी गतिविधियों को बाधित करने के लिए लाया गया था। गांधीजी ने रौलेक्ट एक्ट के खिलाफ रौलेक्ट सत्याग्रह शुरु किया। रौलेक्ट सत्याग्रह 6 अप्रैल 1919 में प्रारंभ किया गया।
- रौलेक्ट सत्याग्रह के द्वारा गांधीजी ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों व कानूनों के खिलाफ मोर्चा शुरु किया था।

159. जलियांवाला बाग हत्याकांड पर संक्षिप्त टिप्पणी करिए।

- जलियावाला बांग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 की घटना है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने के लिए सरकार ने कई कदम उठाएँ जिसमें रौलेक्ट एक्ट भी शामिल था। राष्ट्रवादी नेता सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की रिहाई की माँग व वैसाखी त्यौहार मनाने के लिए 13 अप्रैल को 10,000 से ज्यादा भीड़ जलियांवाला बाग में एकत्र होती है।
- जनरल डायर द्वारा भीड़ को बिना किसी सूचना दिए भीड़ पर गोलीबारी का आदेश दिया जाता है। यही पूरा नरसंहार जलियावाला बाग हत्याकांड़ था जिसमें अंधाधुध गोलियां भीड़ पर दागी जाती है।
- इस गोलीकांड में बहुत से बेगुनाह मारे जाते है, जिसमें महिलायें, बूढ़े, बच्चे सभी शामिल थे।

160. खिलाफत का मुद्दा क्या था? खिलाफत आन्दोलन की चर्चा संक्षिप्त में कीजिए

मुद्दा

- भारतीय मुसलमान सहित संपूर्ण मुस्लिम जगत के तुर्की के खलीफा को अपना धार्मिक प्रमुख मानता था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद, अंग्रेजों (ब्रिटेन) का तुर्की के साथ कठोर रवैया व तुर्की को विभाजित कर खलीफा पद निष्कासित करना ''खिलाफत का मुद्दा'' था।
- भारत में खिलाफत आन्दोलन का प्रारंभिक नेतृत्व अली बंधुओं द्वारा, फिर महात्मा गांधी व अबुल कलाम आजाद द्वारा किया गया।
- खिलाफत आन्दोलन आगे चलकर असहयोग आन्दोलन से मिल गया और खिलाफत–असहयोग आन्दोलन कहलाया।

परिणाम

- वर्ष 1924 में कमाल पाशा सरकार द्वारा खलीफा पद पूरी तरह समाप्त करने से यह आन्दोलन स्वत: समाप्त हो गया। हाँलाकि हिन्दु–मुस्लिम एकता को बल मिला।

161. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा कीजिए।

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन वर्ष 1920 में सी.विजयराघवाचार्य की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसके प्रमुख प्रावधान –
- नागपुर अधिवेशन में असयोग आन्दोलन के कार्यक्रम का अनुमोदन हुआ।
- ''कांग्रेस कार्यकारिणी समिति'' का गठन किया गया व जन जागरुकता को बढ़ाने के लिए स्थानीय स्तर पर ''प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों'' का गठन किया गया ।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस ने संवैधानिक दायरे से बाहर निकलकर जन–आन्दोलन की अवधारणा को महत्व दिया।
- स्वराज्य प्राप्ति के लक्ष्य को बल दिया गया।

162. गांधीजी के द्वारा असहयोग आन्दोलन को क्यों वापिस ले लिया गया।

- गांधीजी के द्वारा असहयोग आन्दोलन को वापिस लेने के कारण व परिस्थितियाँ निम्नलिखित है:–

- गांधीजी के द्वारा असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रमों में अहिंसा पर विशेष जोर दिया गयाा था, लेकिन आन्दोलन के दौरान कई जगह हिंसात्मक घटनाएँ देखी गई थी।
- ''चौरी–चौरा काण्ड की घटना'' जो कि गोरखपुर में 5 फरवरी 1922 को घटित होती है, इसमें 22 पुलिसकर्मी मारे जाते है। यह सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक था।
- खिलाफत का मुद्दा भी धीरे–धीरे अप्रासंगिक हो चुका था।
- गांधीजी ने तात्कालिन परिस्थितियों में आन्दोलन को वापिस लेना सही समझा, क्योंकि आन्दोलन हिंसक हाथों में जाने का डर था।

163. कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी के संबंध में संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- गांधीजी के द्वारा असहयोग आन्दोलन को वापिस लेना तथा मार्च 1922 में गांधीजी की गिरफ्तारी से लोगों के बीच पनपती हुई राष्ट्रीयता की भावना को गहरा आघात पहुँचा। इन परिस्थितियों के चलते कांग्रेस में भी बहस छिड़ चुकी थी। कांग्रेस के कुछ सदस्यों ने असहयोग आन्दोलन को वापिस लेने की निंदा की। कांग्रेस–खिलाफत स्वराज्य पार्टी के उदय की पृष्ठभूमि यहीं से तैयार हुई। कांग्रेस–खिलाफत स्वराज्य पार्टी का गठन सी.आर.दास और मोतीलाल नेहरु द्वारा किया गया था। सी.आर.दास पार्टी के पहले अध्यक्ष व नेहरु को सचिव बनाया गया।

164. असहयोग आन्दोलन की पृष्ठभूमि किस तरह से तैयार हुई? असहयोग आन्दोलन के क्या कार्यक्रम थे?

- प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों द्वारा अंग्रेजों का समर्थन, स्वशासन की उम्मीद पर किया गया था। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की भावना के विपरीत कार्य किया। 1915 रक्षा अधिनियम 1919, रौलेक्ट एक्ट, 1919, जलियावाला बाग हत्याकांड, तथा हंटर आयोग के द्वारा घटना की भेदभाव जाँच व जनरल डायर को सजा न मिलना तथा खिलाफत का मुद्दा असहयोग आन्दोलन के लिए तैयार होती पृष्ठभूमि थी। असहयोग आन्दोलन गांधीजी का पहला व्यापक स्तर पर जन–आन्दोलन था। असहयोग आन्दोलन का अनुमोदन वर्ष 1920 में नागपुर अधिवेशन में हुआ था। असहयोग आन्दोलन का अर्थ था, किसी भी तरह से सरकार का सहयोग न करना।

असहयोग आन्दोलन के प्रमुख कार्यक्रमः–

- सरकारी स्कूलों, कालेजो, अदालतों, विदेशी कपड़ो का बहिष्कार।
- स्थानीय विवादों के निपटारे के लिए पंचायतों का गठन, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना।
- अहिंसा पर जो, भेदभाव को मिटाना, एकता पर बल।

165. काकोरी कांड पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- काकोरी कांड की घटना को ''हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसएिशन'' संगठन द्वारा सम्पन्न किया गया था।
- इस संगठन से जुड़े क्रांन्तिकारियों द्वारा 9 अगस्त 1925को सहारनपुर–लखनऊ लाइन पर सरकारी खजाने वाली रेलगाड़ी को काकोरी नामक गांव में लूट लिया जाता है।
- इस घटना के बाद भारी संख्या में क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चलाया गया व सजा सुनाई गई।

- इसी घटना से जुड़े क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल, असफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिडी, रोशन सिंह को फांसी दी गई थी तथा चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये थे।

166. साइमन कमीशन का विरोध भारत में क्यों किया गया। साइमन कमीशन के प्रभावों की चर्चा कीजिए।

- साइमन कमीशन या साइमन आयोग के गठन की घोषणा वर्ष 1927 में की गई थी। इसके अध्यक्ष सर जॉन साइमन तथा अन्य सदस्य ही अंग्रेज थे। साइमन आयोग का गठन, तत्कालीन समय की सरकारी व्यवस्था, शिक्षा प्रसार तथा अन्य सुधारों की जाँच व रिपोर्ट तैयार करने के लिए की गई थी।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी 1928 को भारत आया तो लोगों ने इसका जमकर विद्रोह किया।
- **विद्रोह का कारण:** एक भी भारतीय का साइमन कमीशन में सदस्य के रुप में शामिल न होना।
- **प्रभाव:** साइमन कमीशन का विरोध जगह–जगह किया गया। पुलिस ने क्रूरता के साथ आन्दोलनकारियों पर लाठी चार्ज किया। विरोध प्रदर्शन में लाला लाजपतराय की मृत्यु लाठीचार्ज के दौरान हुई थी।

167. नेहरु रिपोर्ट से आप क्या समझते है? रिपोर्ट की प्रमुख अनुशंसाएं क्या थी।

- साइमन कमीशन का भारत में विद्रोह किए जाने के उपरांत तत्कालीन भारत के सचिव बिरकन हैड ने भारतीय बुद्धिजीवयों को ऐसा संविधान बनाने की चुनौती दी, जिसका किसी दल द्वारा विरोध न किया जाए, और सभी के लिए मान्य हो।
- इसी चुनौती को स्वीकार कर मोतीलाल की अध्यक्षता व अन्य सदस्यों वाली उपस. मिति ने एक रिपोर्ट पेश की जिसे नेहरु रिपोर्ट कहा गया।

अनुशंसा–

An Institute for MPPSC Examination

- भाषायी आधार पर प्रान्तों का गठन हो,
- मौलिक अधिकारों की माँग की गई।
- उत्तरदायी सरकार की स्थापना केन्द्र व राज्य में की जाए।

168. साइमन कमीशन और नेहरु रिपोर्ट की अनुशंसाओं में क्या भिन्नता थी?

नेहरु रिपोर्ट की अनुशंसा निम्नलिखित हैं–

- उत्तरदायी सरकार की स्थापना केन्द्र व राज्य में हो,
- मौलिक अधिकारों की माँग की गई,
- भारत को पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य का दर्जा मिले,
- संयुक्त निर्वाचन पद्वति की व्यवस्था हो,
- भारत के लिए न्यायालय, लोकसेवा आयोग का प्रावधान,
- देश के सभी वर्गो के धार्मिक व सांस्कृतिक हितों का पूर्ण संरक्षण।

साइमन कमीशन रिपोर्ट व नेहरु रिपोर्ट में भिन्नता

- साइमन रिपोर्ट में भारत को स्वराज्य देने का कोई ऐसा प्रावधान नहीं था। साइमन रिपोर्ट में मौलिक अधिकारों का कोई उल्लेख नहीं किया गया था और न निर्वाचन प्रणाली के दोषों को दूर करने का प्रावधान था। साइमन रिपोर्ट में उत्तरदायी सरकार की स्थापना का कोई प्रावधान नहीं था।

169. नेहरु रिपोर्ट पर जिन्ना की आपत्ति व की गई मांगों पर चर्चा कीजिए।

- नेहरु रिपोर्ट को वर्ष 1928 में सर्वदलीय सम्मेलन में पेश किया गया। जिन्ना के द्वारा रिपोर्ट में कुछ संशोधित प्रस्तावों को जोड़ने की मांग की गई, जिसे ठुकरा दिया गया। इसके चलते मुस्लिम लीग को सम्मेलन से अलग करते हुए, जिन्ना द्वारा नेहरु रिपोर्ट पर आपत्ति व चौदह सूत्री माँगे पेश की।

जैसे कि:—

1. सभी सरकारी योजना में योग्यता के आधार पर मुस्लिम वर्ग को अवसर मिले।
2. प्रांतीय विधानमंण्डलों में 1/3 आरक्षण मुस्लिम वर्ग के लिए।
3. सिन्ध को बम्बई से पृथक नया प्रांत बनाए जाए।
4. केन्द्रीय विधानमंडल में 1/3 आरक्षण, मुसलमानों के लिए।
5. इत्यादि।

170. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ''लाहौर अधिवेशन'' चर्चित आन्दोलन रहा है। संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वर्ष 1929 में अधिवेशन, लाहौर में हुआ। लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा की गई थी। लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस द्वारा निम्नलिखित मांगे, एवं प्रस्ताव रखे गए
- कांग्रेस ने गोलमेज सम्मेल का बहिष्कार करने का निर्णय लिया।
- कांग्रेस कार्यसमिति को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के संबंध में जिम्मेदारी सौंपी गयी।
- ''पूर्ण स्वराज्य'' का लक्ष्य लाहौर अधिवेशन की प्रमुख विशेषता है।
- इस अधिवेशन में ''26 जनवरी 1930'' को ''प्रथम स्वतंत्रता दिवस'' के रुप में मनाने का निर्णय लिया गया।

171. गांधीजी की ग्यारह सूत्रीय मांगे क्या थी?

- गांधीजी के द्वारा ''यंग इण्डिया'' में एक लेख प्रकाशित किया गया, जिसमें ग्यारह मांगे या ग्यारह सूत्रीय मांगे सरकार के समक्ष रखी।

प्रमुख मांगे निम्न थी:—

1. शस्त्र कानून में परिवर्तन किया जाए तथा भारतीयों को आत्मरक्षा हेतु हथियार रखने का लाइसेंस दिया जाए।
2. सभी राजनीतिक बन्दियों की रिहाई की जाए, जिनका हिंसा से कोई संबंध नहीं था।
3. नशीली वस्तुओं के विक्रय पर रोक।
4. डाक आरक्षण बिल पास हो।
5. तटीय यातायात रक्षा विधेयक के संबंध में सरकार सुने।
6. लगान में 50% कमी की जाए।
7. नमक कर समाप्त किया जाए।

अन्य, ये सभी गांधीजी की ग्यारह सूत्रीय मांगे थी।

172. ''डांडी मार्च'' पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- गांधीजी के द्वारा यह घोषणा की गई थी, कि अगर सरकार ग्यारह सूत्री मांगों को पूरा करने का प्रयत्न नहीं कि तो, नमक कानून का उल्लघंन किया जाएगा। जब सरकार द्वारा, गांधी की मांगों को नहीं सुना गया, विरोधस्वरुप गांधीजी ने 12 मार्च 1930 को अपने 78 समर्थको के साथ साबरमती आश्रम से डांडी के लिए यात्रा प्रारंभ की। 6 अप्रैल को गांधीजी ने समुद्रतट में नमक बनाकर कानून तोड़ा। डांडी मार्च को डांडी सत्याग्रह भी कहा जाता है। गांधीजी के द्वारा शुरु किए गए डांडी मार्च या नमक सत्याग्रह का प्रभाव पूरे देश में हुआ। नमक सत्याग्रह यात्रा निक. ाली गई। कई जगह तटीय इलाकों में नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा गया।

173. ''गांधी—इरविन समझौता'' क्या था? संक्षिप्त में टिप्पणी कीजिए।

- गांधी–इरविन समझौता 5 मार्च 1931 को सम्पन्न हुआ। गांधी–इरविन समझौते के अर्न्तगत लार्ड इरविन द्वारा गांधीजी की कुछ मांगों या बातो पर सहमति जताई गई।

गांधी इरविन समझौते के तहत निम्नलिखित बातों पर सहमति जताई गई:–

- निश्चित समुद्री तटीय सीमा में नमक बनाने की अनुमति।
- नशीली पदार्थो की दुकानों में शान्तिपूर्ण विरोध की अनुमति।
- आपातकालीन कानूनों को वापिस लिया जाएगा।
- जो राजनीतिक कैदी हिन्सा से नहीं जुड़े है उन्हे छोड़ा जाएगा। जैसे कुछ अन्य बातो या मांगों पर यह समझौता आधारित था।
- हालांकि उसमें पुलिस ज्यादतियों की जांच व भगतसिंह की साथियों सहित फांसी रुकवाने की मांगों को अस्वीकार कर लिया गया।

174. गांधीजी के द्वारा किए गए सविनय अवज्ञा आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन की तुलनात्मक रुप से चर्चा कीजिए।

- गांधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन के उद्देश्यों में अन्तर को इस प्रकार समझा जा सकता है–
- असहयोग आन्दोलन का लक्ष्य ''स्वराज्य की प्राप्ति'' रखा गया, जबकि सविनय अवज्ञा में पूर्ण स्वतंत्रता को लक्षित किया गया था।
- असहयोग आन्दोलन में बुद्धिजीवियों व अन्य वर्गो का सहयोग पूरी तरह देखा गया था जबकि सविनय अवज्ञा में सहयोग–भावना की कमी देखी गई। हाँलाकि किसान वर्ग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- असहयोग आंदोलन में सरकार की नीतियों के प्रति ''असहयोग'' जबकि सविनय अवज्ञा में ''कानून की अवज्ञा'' को हथियार के रुप में प्रयुक्त किया गया।

175. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कराची अधिवेशन पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- सन् 1931 में कांग्रस का अधिवेशन करांची में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता वल्लभभाई पटेल ने की। करांची अधिवेशन में निम्नलिखित कुछ कार्यो/प्रस्तावों के साथ सम्पन्न हुआ, जैसे कि
- पूर्ण स्वराज्य की मांग पर पुन: बल दिया गया,
- गांधी–इरविन समझौते का अनुमोदन,
- मौलिक अधिकारों से सम्बधित प्रस्ताव,
- राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम को स्वीकृत दिया जाना।
- क्रांन्तिकारियों के वीरता व बलिदान की प्रशंसा की गई।

176. गोलमेज सम्मेलन से आप क्या समझते है? संक्षिप्त टिपण्णी कीजिए।

गोलमेज सम्मेलन

- साइमन कमीशन की रिपोर्ट की असंतुष्टा या पर्याप्त अनुशंसाएँ की कमी के चलते गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन 1930

लंदन में आयोजित प्रथम गोलमेज सम्मेलन, साइमन कमीशन रिपोर्ट व संवैधानिक मुद्दो की चर्चा पर आधारित थी, जो कि ब्रिटिश सरकार व भारतीयों के मध्य ऐसी प्रथम वार्ता थी। कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया जबकि अन्य मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, दलितवर्ग, संगठनों ने भाग लिया।

दूसरा गोलमेज सम्मेलन 1931

इस सम्मेलन में कांग्रेस ने भाग लिया। गांधीजी अपने सहयोगियों के साथ लंदन जाकर सम्मेलन में सम्मिलित हुए, लेकिन सम्मेलन में देश हित की उपेक्षा महसूस होने पर सम्मेलन छोड़कर भारत वापस आ गए।

तीसरा गोलमेज सम्मेलन 1932

इस सम्मेलन में कांग्रेस सम्मिलित नहीं हुई। गोलमेज सम्मेलनों के बाद आंकड़ो व अनुशंसाओं के आधार पर ''भारत सरकार अधिनियम 1935'' लागू किया गया।

177. ''अगस्त प्रस्ताव'' पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- अगस्त प्रस्ताव को सामान्यतया ब्रिटिश सरकार की समझौतावादी दृष्टिकोण की नीति के रुप में समझा जा सकता है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन की हालात खराब थी। युद्ध में भारतीयों का सहयोग प्र. ाप्त करने के उद्देश्य से 8 अगस्त 1940 को अगस्त प्रस्ताव की घोषणा की गई।

अगस्त प्रस्ताव का प्रावधान

- भारत को डोमिनियन स्टेट का दर्जा दिया जाएगा।
- युद्ध के बाद संविधान सभा का गठन किया जाएगा।
- वायसराय की कार्यकारिणी परिषद का विस्तार किया जाएगा।
- अल्पसंख्यकों के हितों को ध्यान रखकर कानून निर्माण किया जाएगा।

178. क्रिप्स मिशन पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- अगस्त प्रस्ताव की असफलता तथा द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सरकार पर बढ़ता हुआ दवाब व भारतीयों का, युद्ध में सहयोग प्राप्त करने की लालसा का परिणाम था क्रिप्स मिशन। ब्रिटिश सरकार द्वारा मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन भारत भेजा गया।

क्रिप्स मिशन के प्रमुख प्रावधान

- डोमिनियन राज्य दर्जे के साथ भारतीय संघ की स्थापना।
- इसके अंतर्गत, युद्ध समाप्त होने पर संविधान निर्मात्री परिषद का गठन किया जाएगा।
- राष्ट्रमंडल में शामिल होना या न होना, भारत का स्वतंत्र अधिकार होगा।
- प्रान्तों को पृथक संविधान बनाने की स्वतंत्रता दी गई, जिन प्रान्तों को संविधान स्वीकार नहीं होगा

An Institute for MPPSC Examination

179. आजाद हिन्द फौज पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए?

- भारत को अंग्रेजों के कब्जे में स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से रासबिहारी बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज नामक सेना का गठन किया गया।
- इस सेना के गठन में कैप्टन मोहनसिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही, क्योंकि ''आजाद हिन्द फौज के गठन'' का विचार सर्वप्रथम इन्हीं ने किया था। प्रारंभ में आजाद हिन्द फौज भारतीय युद्ध बन्दी सैनिकों को शामिल कर बनायी गई थी। जिन्हें जापान द्वारा बन्दी बना लिया गया था। सुभाषचन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज की जिम्मेदारी रासबिहारी बोस द्वारा 4 जुलाई 1943 को सौंपी गयी। मार्च 1944 में ''दिल्ली चलो'' नारे के साथ फौज का आगमन भारत हुआ।
- इसी फौज के नेतृत्व में सुभाषचन्द्र ने सैनिकों से कहा था **''तुम मुझे खून दो मै तुम्हें आजादी दूंगा।''**

180. ''राजगोपालचारी फार्मूला'' क्या है?

- राजगोपालचारी फार्मूला मुस्लिम लीग व कांग्रेस के मध्य समझौता के लिए प्रस्ताव था। इस फार्मूले का गांधीजी ने समर्थन किया था। इसके अनुसार
- मुस्लिम लीग, भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन करे।
- प्रांत में अस्थायी सरकार की स्थापना के लिए मुस्लिम लीग कांग्रेस की सहायता करें
- मुस्लिम बहुत क्षेत्रों का युद्ध समाप्ति के बाद सर्वेक्षण व जनमत के आधार पर निर्धारण कि इन क्षेत्रों को भारत में शामिल होना है या नहीं।

- विभाजन की स्थिति में महत्वपूर्ण विषयों जैसे की वाणिज्य, रेल्वे, खनिज आदि पर समझौते की बात की गई।

181. ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' के कारणों पर चर्चा कीजिए?

- गांधीजी के द्वारा प्रारम्भ किए गए भारत छोड़ो आन्दोलन के निम्नलिखित कारण थे:—

क्रिप्स मिशन की असफलता:—

- 1942 क्रिप्स मिशन को भारत के अनेक दलों द्वारा अस्वीकार कर दिया। क्रिप्स मिशन का असफल होना, भारत छोड़ो आन्दोलन को प्रेरित करने वाला कारण था।

अत्यधिक मूल्य वृद्धि:—

- बढ़ती महँगाई, आवश्यक वस्तुओं का धीरे—धीरे अभाव होना।

ब्रिटिश सरकार की दोषपूर्ण नीतियाँ:—

- भारतीय राजनेताओं को बिना सूचित किए भारत को विश्व युद्ध में शामिल करना।
- शरणार्थियों के साथ ब्रिटिश सरकार की भेदभाव वाली राजनीति।

द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की खराब स्थिति :—

- द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों की स्थिति नाजुक थी। अंग्रेजों की सिंगापुर, मलाया, वर्मा की हार ने गांधीजी व अन्य राजनेताओं में शंका उत्पन्न कर दिया, कि अंग्रेज भारत की रक्षा करने में असमर्थ है।

182. गांधीजी के द्वारा प्रारम्भ किए गए '' सविनय अवज्ञा आन्दोलन'' के कारणों पर चर्चा कीजिए।

- गांधीजी के द्वारा प्रारम्भ किए गए सविनय अवज्ञा आन्दोलन कारण निम्नलिखित है:—

साइमन कमीशन की रिपोर्ट से निराशा

- साइमन कमीशन के विरोध के दौरान लाठी चार्ज व साइमन कमीशन रिपोर्ट में भारत के हितों की उपेक्षा ने गांधीजी को सविनय अवज्ञा के लिए मजबूर किया।

पूर्ण स्वराज का लक्ष्य

- भारतीय राजनेताओं की मांग पूर्ण स्वराज थी।
- कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा का समर्थन किया।

गांधीजी की मांगों की उपेक्षा करना

- लार्ड इरविन ने गांधीजी की मांगों पर ध्यान नहीं दिया, गांधीजी ने सविनय की घोषणा की। उन्होंने इसकी चेतावनी पहले ही लार्ड इरविन को दी थी।

नेहरु रिपोर्ट पर सरकार की आपत्ति

- ब्रिटिश सरकार ने नेहरु रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया, तब कांग्रेस द्वरा सरकार को सविनय अवज्ञा आन्दोलन की चेतावनी दी गई।

183. सत्यशोधक समाज पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

- सत्यशोधक समाज की स्थापना 1875 में ज्योतिबा गोविंदराव फुले द्वारा शुरु किया गया था। सत्यशोधक समाज का उद्देश्य ब्राम्हणवाद और उसकी कुरीतियों तथा रुढ़िवादी विचारधाराओं के खिलाफ आवाज उठाना था। सत्यशोधक समाज द्वारा कर्मकाण्डो, पुजारियों के वर्चस्व व उनकी मान्यताओं कर्मवाद, पुर्नजन्म जैसे अन्य सिद्धांतों का विरोध किया गया।
- सत्यशोधक समाज ने हिन्दुओं के पवित्र ग्रंथो, उनके लेखो पर आपत्ति जताई।

- ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज के जरिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विरोध किया, उनका मानना था कि कांग्रेस अछूतो व गरीब किसान वर्गो का मुद्दा हल करने का प्रयत्न नहीं करेगी।
- अपने विचारों को उन्होंने अपनी पुस्तक '' गुलामगिरी'' व ''सेनकारन्यवा'' असुधा'' में प्रस्तुत किया। फुले के बाद सत्यशोधक समाज साहू महाराज के नेतृत्व में आगे बढा।

184. ''छत्रपति साहू महाराज'' का सामाजिक सुधार आन्दोलन में क्या योगदान रहा?

- छत्रपति साहू महाराज को समाज सुधारक एवं भारत के एक सच्चे प्रजातंत्रवादी के रुप में याद किया जाता है।
- छत्रपति साहू महाराज ने दलित और शोधित वर्ग के कष्टों को गम्भीरता से समझा। राजा होते हुए भी उन्होंने दलित वर्ग व शोषितों से नजदीकी बनाए रखी।
- उन्होंने दलित वर्ग के बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया शुरु की। गरीब छात्रों के छात्रावास स्थापित किये।
- साहू महाराज ने अपने शासन काल के दौरान बाल विवाह पर अंकुंश लगाया। अंतरजातीय विवाह और विधवा पुर्नविवाह का समर्थन किया। साहू महाराज ज्योतिबा फुले व सत्यशोधक समाज के विचारों से प्रभावित थे। ज्योतिबा फुले के बाद सत्यशोधक समाज को इन्होंने आगे बढाया।

185. असहयोग आन्दोलन के परिणामों पर चर्चा कीजिए।

- **असहयोग आन्दोलन के निम्न परिणाम हुए—**
- इसने आन्दोलन को वर्ग आन्दोलन के स्थान पर जन आन्दोलन बना दिया,जिसमें कृषको,श्रमिको,विधार्थियो,महिलाओं तथा सभी वर्गो ने पहली बार भाग लिया।
- इस आन्दोलन ने लोगों में आत्मविश्वास पैदा किया,तथा उनमें ब्रिटिश शक्ति का भय कम हुआ।
- क्रांग्रेस जो अभी तक विचारो के आदान—प्रदान का ही मंचा था एक क्रांतिकारी पार्टी बन गई।
- संवैधानिक उपायों की रूढिवादिता समाप्त हो गई और जनता संघर्ष के लिए तैयार हुई।
- इस आन्दोलन ने शिक्षा तथा सामाजिक सुधारो पर भी जोर दिया ।

186. भारत छोडो आन्दोलन अपने उददशो की प्राति में पूर्ण सफल नही रहा,इसकी असफलता के प्रमुख कारण बताईये

- आन्दोलन का उददेश्य भारत के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना था परन्तु यह पूर्ण सफल नही रहा, आन्दोलन की असफलता के प्रमुख कारण निम्न थे—
- आन्दोलन के संगठन में कमियॉ— यह एक जन आन्दोलन था परन्तु पूर्व में रणनीति निश्चित न होन तथा प्रमुख नेताओं की गिरफतारी के कारण नेतृत्वहीन हो गया।
- सरकारी नेताओं और उच्च वर्गो की वफादारी—देशी रियासतों के नरेश,सेना,पुलिस,उच्च अधिकारी तथा कर्मचारी आन्दोलन के दौरान सरकार के प्रति वफादार बने रहे जिससे प्रशासन को अधिक विरोध नही झेलना पडा।
- प्रशासन का आन्दोलनकारियों की तुलना में शक्तिशाली होना— आन्दोलनकारियों की न कोई गुप्तचर व्यवस्था थी न ही कोई संदेश भेजने के साधन साथ ही आर्थिक शक्ति भी कमजोर थी ।

- शासन का कठोर दमनचक्र—प्रशासन ने अत्यंत कठोरता से आन्दोलन का दमन किया,आन्दोलन कारियो पर लाठी और बन्दूको से प्रहार किया गया ।
- आन्दोलन का सीमित क्षेत्र—आन्दोलन की असफलता का एक बडा कारण इसका सीमित क्षेत्र भी था। वस्तुत: आंदोलन कुछ क्षेत्र के किसानो तथा शहरो के निम्न मध्यम वर्ग के लोगों तक ही सीमित रहा। देश के अनेक क्षेत्र तथा वहा के ब्रिटिश समर्थक शासको व नवाबो ने आन्दोलनकारियो का साथ नही दिया।

187. भारत छोडो आन्दोलन के महत्व पर चर्चा कीजिए।

- निश्चित ही आन्दोलन अपने मूल लक्ष्य अर्थात ब्रिटिश शासन की समाप्ती को तात्कालिक रूप से प्राप्त करने में सफल नही रहा,लेकिन इस आन्दोलन ने भारत की जनता में एक ऐसी जाग्रती व चेतना का संचार किया जिसके कारण ब्रिटिश सत्ता का भारत पर लम्बे समय तक शासन करना संभव नही रहा।
- इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप अधिराज्य की पुरानी मांग सर्वथा समाप्त हो गई और उसका स्थान पूर्ण स्वतंत्रता की मांग ने ले लिया।
- इस आन्दोलन से उत्पन्न चेतना के परिणामस्परूप ही 1946 ई. में जल सेना का विद्रोह हुआ जिसने ब्रिटिश शासन पर चोट की।
- इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप युद्व पश्चात अमेरिका तथा इंग्लैण्ड में भारत में पक्ष में जनमत तैयार हुआ जिससे अंग्रेजो को विवश होकर भारत छोडना पडा
- उक्त बिन्दुओ से भारत छोडो आन्दोलन का महत्व स्पष्ट होता है।

188. केबिनेट मिशन प्लान, 1946 तथा इसकी प्रमुख सिफारिशो क्या थी

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 15 फरवरी 1946 को भारतीय संविधान सभा की स्थापना एवं तत्कालीन त्वलंत मुददो पर विचार—विमर्श करने के लिए केबिनेट मिशन भारत भेजने की घोषणा की, 24 मार्च 1945 को भारत पहुचे केबिनेट मिशन के सदस्य थे—स्टेफोर्ड क्रिप्त,पेथिक लारेन्स तथा एलेक्जण्डर।
- विभिन्न समूहो से चर्चा के पश्चात कमीशन ने 16 मई 1946को अपनी रिपोर्ट पेश की जिसकी सिफारिशे इस प्रकार थी—
- समस्त भारत के लिए एक संघ का निर्माण किया जाए जिसमें सभी ब्रिटिश भारत और दशी रियासते शामिल हो
- विदेश,रक्षा,यातायात आदि विषय केन्द्र के पास रखे जाए और शेष विषय प्रांतो के पास रहे।
- साम्प्रदायिक समस्याओं का निर्णय सदन में उस सम्प्रदाय के सदन में उपस्थित सदस्यों के बहुमत से हो
- प्रान्तें को अपना अलग संविधान बनाने का अधिकार हो।
- भारत के लिए 389 सदस्यों से युक्त एक संविधान सभा का निर्माण हो।
- एक अंतरिम सरकार का निर्माण हो जिसमें सभी दलो के सदस्य सम्मिलित हो।
- देशी रियासतों का भी जनसंख्या के आधार पर संविधान सभा में प्रतिनिधित्व होगा।

189. शाही नौसेना विद्रोह (1946) के संबंध मे आप क्या जानते है, चर्चा कीजिए।

- 19 फरवरी 1946 को ब्रिटिश सेना के जहाज एन.एस.तलवार के कर्मचारियों ने ब्रिटिश सरकार के समक्ष खराब खाने तथा भेदभावपूण व्यवहार की शिकायत की, जिस पर अंग्रेज सरकार ने कोई ध्यान नही दिया ।

- अंग्रेज सरकार की इस नीति के खिलाफ नौसेना के कर्मचारिये ने विद्रोह कर दिया,जहाज पर से यूनियन जैक के झण्डो को हटाकर यहॉ पर कॉग्रेस एवं लीग के झण्डे लगा दिये गए।
- इस विद्रोह को 1946 के शाही नौसेना के विद्रोह के नाम से जाना जाता है।
- मुम्बई में शुरू हुआ यह विद्रोह कुछ ही समय में मद्रास, करॉची तक फेल गया तथा विद्रोह के समर्थन में 22 फरवरी को मुम्बई में एक अभूतपूर्व हडताल का भी आयोजन किया गया जिसमें लगभग 20 लाख मजदूरो ने हिस्सा लिया।
- 25 फरवरी 1946 को नौसेना के विद्रोहियो ने सरदार पटेल के समझाने पर आन्दोलन वापस लिया।

190. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के प्रमुख प्रावधानो को स्पष्ट कीजिए।

- लॉर्ड माउंटवेटन योजना को लागू करने के लिए 4 जुलाई 1947 को एक विधेयक(भारतीय स्वतंत्रता विधेयक) ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया ,जिसे 18 जुलाई को ब्रिटिश संसद ने भारतीय स्वतंत्रता अधिकनियम के रूप में परित किया,जिसके मुख्य प्रावधान निम्न थें—
- भरत तथा पाकिस्तान नामक दो स्वतंत्र राष्ट्रो की स्थापना की जाएगी।
- दोनो राष्ट्र अपनी अपनी संविधान सभा का गठन करेंगें
- दोनो को राष्टमंडल से अलग होने का अधिकार होगा।
- दोनो राष्टो के लिए एक—एक गवर्नर जनरल की व्यवस्था की जायेगी।
- जिस समय तक दोनो राष्टो में संविधान का निर्माण न हो तब तक दोनो राष्ट की संविधान सभाएँ 1935 के अधिकनयम के अनुसार कानून निर्माण का कार्य कर सकेंगी
- भारत सचिव का पद समाप्त कर दिया जाएगा।

An Institute for MPPSC Examination

191. सामाजिक धार्मिक सुधार के क्षेत्र में ब्रह समाज के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

- ब्रह समाज 19वी शताब्दी का एक प्रमुख सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन था जिसकी स्थापना राजाराम मोहनराय ने 20 अगस्त 1828 मे की थी।
- राजा राम मोहन राय प्रथम भारतीय थे जिन्होने भारतीय समाज से सामाजिक व धार्मिक कुरीतियो को दूर करने का सार्थ प्रयास किया।
- धार्मिक द्रष्टि से ब्रह समाज ने अपने दृष्टिकोण को उपनिषदो और वेदों पर आधिरित करते हुए एक ईश्वर तथा पूर्ति पूजा एवं कर्म कांड की निरर्थकता आदि पर अपने विचार प्रकट करते हुए लोगो में सुधारो को प्रेरित किया।
- समाजिक सुधार के क्षेत्र में ब्रह समाज ने सती प्रथा,बाल विवाह,बहु विवाह,आदि अनेक सामाजिक कुरीतियो का विरोध किया
- ब्रम्ह समाज ने उपर्युक्त के अलावा स्त्री शिक्षा,अन्तर्जातीय विवाह,विधवा विववाह आदि क्षेत्रो में भी कार्य किया

192. रामकष्ण मिशन एवं इसके सिद्धांतो की चर्चा कीजिए।

- रामकृषण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द में 1896–97 में अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं एवं आदेर्शो का भारत एवं विदेशों में प्रचार करने के लिए की थी।
- राम कृष्ण मिशन का प्रमुख उददेश्य लोगों में आध्यात्मिक उन्नति के साथ—साथ दलित और पीडित मानवता की सेवा करना है।

- रामकृष्ण मिशन के प्रमुख सिघांतो में विभिन्न धर्मो में एकता,हिन्दु धर्म की महानता,मूर्ति पूजा का समर्थन,ईश्वर की एकता पर विश्वास तथा पश्चिमी भौतिकवादी सभ्यता से सावधान रहना आदि प्रमुख है
- मिशन मानव मात्र की सेवा को ईश्वर की सेवा मानता था इस उददेश्य से मिशन द्वारा विभिन्न स्थलों पर स्थायी रूप से अस्पताल, विघालय, छात्रावास आदि की स्थापना भी की

193. यंग बंगाल आन्दोलन एवं इसके उददेश्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

- 1826 ई. मे हिन्दु कॉलेज में जब स्कॉटलैण्ड निवासी हेनरी विवियन डेरोजियो की नियुक्ति प्राध्यापक के रूप में हुई तो उसने अपने विचारें से बंगाल के शिक्षित वर्ग को आन्दोलित किया ।
- डेरोजियों के अनुयायी डेरोजियन्स कहलाये और इन्ही के आन्दोलन को यंग बंगाल आन्दोलन या युवा बंगाल आन्दोलन कहा गया।
- बंगाल के शिक्षित तथा उग्र युवाओं ने हेनरी विवियन डेरोजियों की शिक्षाओं के आधार पर धार्मिक,सामाजिक
- सांस्कृतिक,नैतिक तथा आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिए अनेक संस्थाओं के माध्यम से कार्य किया।
- इस हेतु सर्वप्रथम विद्वत सभा की स्थापना की गई। इस सभा में समाज मे व्याप्त कुरीतियों एवं विसंगतियों में सुधार हेतु वाद विवाद के माध्यम से हल ढूढने का प्रयास किया जाता था।
- यघपि यंग बंगाल आन्दोलन समकालीन परिस्थितियों के अनुकूल नही था फिर भी इसने राजाराम मोहन राय की परम्परा को आगे बढाने का कार्य अवश्य किया।

194. प्रार्थना समाज एवं इसके उददेश्यो पर चर्चा कीजिए।

- प्रार्थना समाज की स्थापना केशव चन्द्र से की प्रेरणा से 1867 ई. में महाराष्ट्र में हुई।
- प्रार्थना समाज ईश्वर उपासना का प्रचार करता था और समाज सुधार के कार्यो को प्रमुखता देता था।
- महादेव गोविन्द रानाडे तथा डॉ भण्डारकर के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप प्रार्थना समाज बहुत प्रसिद्व हुआ
- प्रार्थना समाज ने विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया तथा मूर्ति पूजा,छुआछूत आदि को दूर करने की दिशा में अथक प्रयास किये।
- प्रार्थना समाज द्वारा दलितो,पीडितो की दशा सुधारने हेतु दलित जाति मण्डल समाज सेवा संघ एवं दक्कन शिक्षा संघ जैसी कल्याणकारी संस्थाओं का गठन किया।

195. समाज सुधार के क्षेत्र में महादेव गोविंद रानाडे के विचारों एवं कार्यो पर प्रकाश डालिए।

- महादेव गोविन्द रानाडे भारत के प्रसिद्व राष्ट्रवादी ,समाज सुधारक,विद्वान तथा न्यायविद्व थे
- प्रार्थना समाज के मंच से उन्होने महाराष्ट्र में अंधविश्वास और अनेक कुरीतियों का विरोध किया।
- उन्होने स्त्री शिक्षा का प्रचार किया,वे विधवा विवाह के समर्थक और बाल विवाह के कटटर विरोधी थे,विधवा विवाह का समर्थन करने के लिए उन्होने विधवा विवा मंडल की स्थापना की।
- रानाडे मानते थे कि सामाजिक सुधार के लिए पुरातन कुरीतियो को तोडना ही पर्याप्त नही है,बल्कि रचनात्मक कार्यक्रमो के द्वारा भी लोगो में सुधार के प्रयास किये जाने चाहिए।
- वे स्वदेशी के समर्थक थे तथा देश में निर्मित वस्तुओं के उपयोग पर बल देते थे।

196. समाज सुधारक के रूप में ईश्वर चन्द्र विघासागर के योचदान पर चर्चा कीजिए।

- ईश्वर चन्द्र विघासागर (1820–1891) आधुनिक भारत के प्रसिद्व समाज सुधारक थे।
- प्रारंभिक जीवन में उन्होने फोर्ट विलियम कालेज,कोलकाता में संस्कृत के शिक्षक के रूप में कार्य किया ,बाद में वह संस्कृत कालेज के प्राचार्य के पद तक पहुचे।
- उन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में स्त्री शिक्षा तथा विधवा पुनर्विवाह पर अधिक जोर दिया,तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे भारतीय और पाश्चात्य भाषाओं के समन्वय के पक्षधर थे।
- शिक्षा के प्रसार के लिए विघासागर जी ने देशी भाषा और बालिका शिक्षा के लिए कोलकाता में मेट्रोपेलिटन कॉलेज की स्थापना भी की।
- समाज सुधार के क्षेत्र में ईश्वरचंद्र विघासागर की एक बहुत बडी देन 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम का पारित कराना रहा।

197. आर्य समाज द्वारा धार्मिक क्षेत्र मे कौन–कौन से सुधार कियें? प्रकाश डालिये

- **आर्य समाज ने धार्मिक–अन्धविश्वासों तथा भेदभावो को दूर करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये जैसे–**
- मूर्ति–पूजा और अन्य धार्मिक अन्धविश्वासों का आर्य समाज ने घोर विरोध किया।
- विभिन्न देवी–देवताओं के स्थान पर ईश्वर की उपासना पर जोर दिया।
- अनेकेश्वरवाद तथा अवतारवाद का विरोध तथा खण्डन किया।
- आर्य समाज ने वेदो की और लौटो का नारा दिया। वेदो में वर्णित यज्ञो और अन्य संस्कारों की व्याख्या करते हुए दयानन्द ने बताया कि हवन का उददेश्य वायुमण्डल को शुद्व करना है।
- आर्य समाज ने हिन्दुओं को अन्य धर्मो में जाने से ही नही रोका बल्कि शुद्वि द्वारा मुसलमानो तथा ईसाई बने हिन्दुओं को दोबारा अपने धर्म में सम्मिलित किया।
- प्राचीन आर्य सभ्यता और उसकी संस्कृति को सामने रखकर भारतीयों में आत्मसम्मान और आत्म गौरव उत्पन्न किया।

198. आधुनिक भारत में जाति–प्रथा के विरूद्व हुए समाज सुधार प्रयासों पर प्रकाश डालिये।

- जाति–प्रथा भारतीय समाज की सबसे बडी बुराईयो में से एक है जिसके विरूद्व अनेक सुधारकों ने आन्दोलन किये।
- तथाकथित उच्च वर्ग के लोगों द्वारा पिछडे वर्गो के लोगों,अनु.जाति तथा अनु. जनजाति के लोगो पर अनेक अत्याचार किये जाते थे व शोषण होता था।
- केशवचन्द्र सेन के प्रयत्नों से नेटिव मेरिज एक्ट पारित किया गया ,इसके अन्तर्गत बहु–विवाह व बाल–विवाह को अवैध घोषित किया गया तथा अन्तर्जातीय विवाहो को कानूनी मान्यता दी गई।
- बुद्विवादी विचारकों तथा संस्थानों ने जाति–प्रथा के विरूद्व आवाज उठाना शुरू किया। ब्रह समाज,प्रार्थना समाज,आर्य समाज,रामकृष्ण मिशन,थियोसोफिकल सोसाईटी आदि संस्थाओं ने अछूतो के उद्वार के लिए भरपूर प्रयास किये।
- राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान महात्मा गॉधी द्वारा अछूतो के उद्वार के लिए किये गये प्रयास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है ,गॉधी जी ने 1932 में अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना भी की।
- आगे चलकर डॉ.भीमराव अम्बेडकर ने सामाजिक कुरीतियों के विरूद्व शक्तिशाली आन्दोलन छेडा। स्वतन्त्रता के पश्चात सरकार की और से इस प्रथा को हटाने के लिए व्यापक प्रयास किये गये।

गणंतत्र के रुप में भारत का उदय, राज्यों का पुर्नगठन,मध्यप्रदेश का गठन, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के प्रमुख घटनाएँ

3 □□ों □□प्रश्नोत्तर

199. भू—दान आन्दोलन

- प्रसिद्व गॉधीवादी,विचारक विनोबा भावे ने सन् 1951 मे चलाया गया आन्दोलन।
- इस आन्दोलन से विनोबा भावे ने भू—स्वामियों से भू—दान के रूप मे छठवें हिस्से के दान का अनुरोध किया।

200. सामुदायिक विकास कार्यक्रम

- भारत सरकार द्वारा इस कार्यक्रम का सीमित स्तर पर प्रारंभ 1952 ई. में किया गया।
- इस कार्यक्रम में ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पक्ष जैसे—खेती को बेहतर बनाने की विधियो से लेकर संचार,स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार सम्मिलित थें।

201. कुमारप्पा समिति

- स्वतंत्रता पश्चात कृषि सुधार के क्षेत्र में गठित समिति
- जुलाई 1949 ई.में समिति ने सुझाव दिया कि राज्य को कृषि के विभिन्न स्तरों के अनुरूप विभिन्न सहकारों को को लागू करवाने के अधिकार सौपे जाने चाहिए।

202. स्वतंत्रता पश्चात भूति सुधारो के उददेश्य

- बिचोलियों की समाप्ति
- काश्तकारों को स्वामित्व
- भमि हदबन्दी
- सहकारी एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रम

An Institute for MPPSC Examination

203. स्वतंत्रता पश्चात भारत की विदेश नीति के आधार क्या थे

- सभी देशो के साथ मित्रतापूर्ण संबंध
- संघर्ष की स्थिति को शांति के तरीको से सुलझाना
- सभी राष्ट्रो को बराबर का दर्जा देना
- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो में निष्पक्षता रखना।

204. पंचशील

- मानव कल्याण तथा विश्व शांति के आदर्शो की स्थापना के लिए विभिन्न राजनीतिक,सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था वाले देशों में परस्पर सहयोग के पॉच आधारभूत सिद्वांत
- 28 अप्रेल 1954 ई.को तिब्बत संबंधी भारत—चीन समझौते में सर्वप्रथम इन पॉच सिद्वांतो को आधारभूत मानकार संधि की गई।

205. गुटनिरपेक्षता की नीति

- गुटनिरपेक्षता नीति का विश्व के किसी भी गुट के साथ द्विपक्षीय संबंधो के आधार पर सैनिक समझौते में भाग न लेना है।
- इस नीति का पालन करने वाले राष्ट्र जहॉ गुटबाजी से अलग रहते है वही दूसरी और विश्व शांति और सुरक्षा में प्रगति हेतु अंतराष्टीय संगठनों को भरपूर मदद देते है

5 □□ां □□प्रश्नोत्तर

206. भारत विभाजन के कारणों की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- भारत के विभाजन तथा पाकिस्तान नामक अलग देश के प्रस्ताव के आधार पर 1940 में मुस्लिम लीग ने लाहौर में पाकिस्तान प्रस्ताव पेश कर दिया था।
- भारत विभान की प्रमुख परिस्थितियों/कारणों को निम्नलिखित आधारों से समझा जा सकता है:—

साम्प्रदायिक झगड़े, उपद्रव व दंगे की स्थिति:—

- 1946-47 में साम्प्रदायिक झगड़े व हिंसात्मक माहौल पाकिस्तान निर्माण के लिए उत्तरदायी था।

अंतरिम सरकार की विफलता:—

- अंतरिम सरकार में शामिल लीग के सदस्यों ने कांग्रेस का समर्थन नहीं किया, व अपने उद्देश्य, पाकिस्तान निर्माण पर अडिग रहे।

तत्कालीन स्थिमि में भारत की सुरक्षा का मुद्दा:—

- कांग्रेस के नेताओं ने यह अनुभव किया कि भारत को सशक्त बनाने या सुरक्षा की दृष्टि से विभाजन आवश्यक है।
- जिन्ना की हठ या पाकिस्तान निर्माण को लेकर दृढ़ता।

207. उन कारकों पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए जो भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायक थे।

भारत की स्वतंत्रता में भूमिका निभाने वाले महत्वपूर्ण कारक—

- भारत में राष्ट्रीयता की भावना व्यापक व रुप में फैल चुकी थी।
- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों ने भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
- इंग्लैड में लेबर पार्टी का सत्ता में आना, तथा इसका भारत की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा। चुनावी घोषणा में लेबर पार्टी ने भारत की स्वतंत्रता का मुद्दा उठाया था।
- अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर दूसरे विश्व युद्ध से ही ब्रिटेन पर भारत को स्वतंत्र करने का दवाब बन रहा था।
- भारत में साम्प्रदायिक बढ़ती हुई हिंसात्मक घटनाएँ, व साम्यवाद का खतरा, क्योंकि दूसरे विश्व युद्ध के बाद भारत में साम्यवाद तेजी से विकसित होने लगा था, और ब्रिटिश सरकार अन्तर्राष्ट्रीय पर साम्यवाद से सुरक्षित रहने हेतु व भारत में तत्कालीन स्थिति से निपटने हेतु भारत को स्वतंत्र करना चाहा।

208. सीमा आयोग का गठन तथा भारत विभाजन पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

- सीमा आयोग— भारत की आजादी से पूर्व तथा भारत के विभाजन से पहले गवर्नर लार्ड माउंटबेटन द्वारा जुलाई 1947 में सीमा आयोग का गठन किया गया। सीमा आयोग का वास्तविक उद्देश्य भारत विभाजन के सीमा सबन्धी बंटवारे को लेकर विवाद या समस्या को हल करना था। अर्थात् विभाजन रेखा खीचना था। सीमा आयोग के सदस्यों में मुस्लिम लीग व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के समान रुप से सदस्य शामिल थे। सीमा आयोग के अध्यक्ष सिरिल रेडक्लिफ थे। इनके द्वारा ही रेडक्लिफ अवार्ड की घोषणा तैयार की गई।

- 14–15 अगस्त मध्य रात्रि भारत में अंग्रेजी शासन खत्म हुआ। भारत व पाकिस्तान, दो स्वतंत्र देशों को सत्ता हस्तांतरित की गई।
- 15 अगस्त 1947 तक 136 देशी रियासते भारत में सम्मिलित हो चुकी थी। सिवाएँ कश्मीर, जूनागढ़, हैदराबाद को छोड़कर लगभग सभी रियासतें भारत में शामिल हो गई।

209. देशी रियासतो के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका का वर्णन कीजिए।

- राष्ट्रीय अस्थाई सरकार में 27 जून 1947 को सरदार पटेल ने नवगठित रियासत विभाग का अतिरिक्त कार्यभारत संभाला और वी.पी.मेनन को अपना मुख्य सहायक सचिव बनाया। इस विभाग को भारत की लगभग 550 से अधिक छोटी–बड़ी रियासतों के एकीकरण की जिम्मेदारी सौंपी गई।
- सरदार पटेल के दृढ निश्चत और कूटनीति के परिणामस्वरुप 15 अगस्त 1947 ई. तक प्राय: सभी भारतीय राज्यों ने भारत में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया।
- जूनागढ के नवाब के विरुद्ध जब वहाँ की प्रजा ने विद्रोह कर दिया तो पटेल ने जूनागढ़ में जनमत संग्रह की मांग की, परिणामस्वरुप नवाब भागकर पाकिस्तान चला गया और इस प्रकार जूनागढ़ को भी भारत में मिला लिया गया।
- जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरकार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर (ऑपरेशन पोलो के माध्यम से) निजाम का आत्म–समपर्ण करा लिया।
- इसी प्रकार कश्मीर की समस्या भारत तथा पाकिस्तान के मध्य सबसे जटिल समस्या रहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कश्मीर के महाराज हरिसिंह कश्मीर को एक स्वतंत्र रियासत रखना चाहते थे तथा भारत व पाकिस्तान से यथास्थिति समझौता रखना चाहते थे। 22 अक्टूबर 1947 को पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया तब महाराजा हरिसिंह ने 24 अक्टूबर 1947 को पहली बार भारत सरकार से सहायता मांगी। तभी सरदार पटेल ने निर्णय किया कि महाराजा को तभी सहायता दी जाएगी, जब वे भारत में विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर देगे।
- इस प्रकार सरदार पटेल ने अपनी दूरदर्शिता तथा सूझबूझ से देशी राज्यों का एकीकरण किया और भारत को एकता के सूत्र में बांधा। इस संदर्भ में बी.एन.गाडगिल ने कहा था कि यदि महात्मागांधी हमारी स्वतंत्रता के निर्माता है तो वल्लभ भाई पटेल भारतीय संघ के विश्वकर्मा है।

210. मध्य प्रदेश का गठन की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

- भारत की स्वतंत्रता के समय देश में सेकडो स्वतंत्र रियासते थी,जिनहे वल्लभ भाई पटेल के प्रयत्नों से भारत का अंग बनाया गया।
- 1950 में पूर्व ब्रिटिश सेंट्रल प्रॉविन्स और बरार,मकराई की रियासते व छत्तीसगढ को मिलाकर मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ,तथा नागपुर को इसकी राजधानी बनाया गया।
- सेन्ट्रल इंडिया एजेंसी द्वारा मध्य भारत,विंध्य प्रदेश और भोपाल जैसे नए राजयो का गठन किया गया,इसके बाद राज्यो के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप 1 नवंबर 1956 को मध्य भारत ,विंध्य और भोपाल जैसे राज्यों का विलय मध्य प्रेदश में कर दिया गया।
- तत्कालीन सेंट्रल प्रॉविन्स और बरार के कुछ जिलो को महाराष्ट्र में स्थानांतरित किया गया। साथ ही राजस्थान,उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के साथ भी कुछ संयोजन हुए। तथा इस प्रकार मध्य प्रदेश का अस्तित्व साकार हुआ व इसकी राजधानी नागपुर के स्थान पर भोपाल बनाई गई।

- 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश का दक्षिण पूर्वी से छत्तीसगढ राज्य का निर्माण किया गया।
- वर्तमान में मध्यप्रदेश में कुल 52 जिले है।

211. स्वतंत्रता पश्चात राज्यों के भाषायी पुनर्गठन पर टिप्पणी लिखिए।

- स्वतंत्रता पश्चात तेलगू भाषियो के लिए अलग राज्य की प्रबल मांग और श्रीरामल्लू के आमरण अनशन के बाद निधन से उत्पन्न परिस्थितियों को देखते हुए प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा 1अक्टूबर 1953 को अलग आन्ध्र प्रदेश राज्य का गठन किया गया।
- उक्त भाषायी राज्य के गठन के पश्चात अन्य भाषायी राज्यो के गठन की मांग भी तेज हो उठी,तत्पश्चात नेहरू द्वारा 22 दिसम्बर 1953 को जस्टिस फजल अली की अध्यक्षता में एक पुनर्गठन आयोग का गठन किया।
- इस आयोग ने 30 सितम्बर 1955 को ए,बी,सी,डी,राज्यों के वर्गो को समाप्त कर राष्टीय एकता ,प्रशासनिक व वित्तीय व्यवहार्यता,आर्थिक विकास,अल्पसंख्यको के हितो का संरक्षण और भाषा को राज्यों के पुनर्गठन का आधार बनाय जाने की सिफारिश की।
- सरकार ने उक्त आयोग की सिफारिशों को कुछ संशोधनो के पश्चात स्वीकार करते हुए संसद में जुलाई 1956 में राज्य पुरर्गठन अधिनियम पारित किया तथा 14 राज्य तथा 6 केन्द्रशासित प्रदेशो का गठन किया।
- राज्य पुनर्गठन की इस प्रक्रिया ने भविष्य में अन्य क्षेत्रो में भी भाषा वा सांस्कृतिक आधार पर राज्यो के गठन का आधार तैयार किया और भविष्य में महाराष्ट्र, गुजरात, नागालैण्ड, पंजाब, हरियाणा तथा पूर्वोत्तर के अनेक राज्यो का गठन इसी आधार पर किया गया।

212. भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के लिए किये गए प्रयासों का वर्णन कीजिए।

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भाषा के आधार पर प्रान्तों के पुनर्गठन की मांग की थी,जिसे 1928 ई. में नेहरू रिपोर्ट में पुन: दोहराया गया।
- 1948 में इस हेतु एस.के.दर की अध्यक्षता में भाषायी राज्य आयोग का गठन किया गया।
- भाषायी राज्यों के उग्र समर्थन को शान्त करने के लिए कांग्रेस ने दिसम्बर 1946 ई.में एक समिति नियुक्त की जिसके सदस्य जवाहर लाल नहेरू,सरदार पटेल और पटटाभि सीतारमैया थ।
- अगस्त 1953 ई. में राज्य पूनर्गठन आयोग नियुक्त किया गया जिसमें जस्टिस फजल अली,के.एम.पनिक्कर और ह्रदयनाथ कुंजरू थै।
- नवम्बर 1956 ई. में संसद द्वारा राज्य पुनर्गठन विधेयक पास कर दिया गया,जिसमें 14 राज्य तथा 6 केन्द्र शासित प्रदेशो की व्यवस्था की गई।

213. गुट निरपेक्षता से आप क्या समझते है,स्पष्ट कीजिए।

- गुट निरपेक्षता का सरल अर्थ है कि विभिन्न शक्ति गुटो से तटस्थ या दूर रहते हुए अपनी स्वतंत्र निर्णय नीति और राष्ट्रीय हित के अनुसार सही या न्याय का साथ देना।
- स्वतंतत्रा पश्चात पंडित जवाहर लाल नहेरू,मिस्र के नासिर व यूगोस्लाविया के टीटो ने गुटनिरपेक्षता को सही रूप में परिभाषित करने वाले सिघांतो को विश्व के सामने रखा।
- इन सिघांतो के अनुसार ऐसा देश जो सैनिक गुटों से दूर रहकर स्वतन्त्र विदेश नीति का पालन करता हो और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूक हो गुट–निरप्रक्ष देश कहलाता है।

- गुट निरपेक्ष आन्दोलन का जन्म विशेषतौर पर द्वितीय युद्व के बाद प्रारंभ हुआ
- 1961 में संस्थापक देशो सहित गुटनिरपेक्ष देशो की संख्या 25 थी ,लेकिन आज यह संख्या 115 है।

214. विभिन्न देशो द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने के क्या कारण रहे, स्पष्ट कीजिए।

- साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद का भय
- शीत युद्व का वातावरण
- स्वतंत्र विदेश नीति की इच्छा
- गठबन्धन राजनीति का विरोध
- राष्ट्रवाद पर आधारित राष्टीय हित की भावना
- आर्थिक विकास की आवश्यक्ता
- युद्व का भय और विश्व शांति का विचार।

215. गुट निरपेक्ष आन्दोलन के उददेश्य बताईये

- शीत युद्व की राजनीति में शामिल नहीं होना और अमेरिका या सोवियत संघ के किसी भी गुट में शामिल नही होना।
- जो देश अभी उपनिवेशवाद से आजाद हुए है,उनकी स्वतंत्रता का अनुरक्षण करना तथा जो देश अभी उपनिवेशवाद के चंगुल से नही निकल पाये है,उनकी आजादी के लिए प्रयत्न करना
- सार्वभौमिक परमाणु निश्स्त्रीकरण को बढावा देना।
- वैश्विक स्तर पर सैन्य संघर्षो को हतोत्साहित करना तथा इससे दूरी बनाये रखना।
- वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों के संरक्षण पर बल देना।

216. वर्तमान में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के समक्ष विभिन्न चुनौतियॉ कौन कौन सी है,स्पष्ट कीजिए।

- गुटनिरपेक्ष आनदोलन जब प्रारंभ हुआ था तब शक्ति के आधार पर विश्व दो ध्रुवों में बटां हुआ था,लेकिन वर्तमान वैश्विक परिवर्तनो में विश्व को बहुध्रुवीय बना दिया है।
- क्षेत्रीय प्रतिद्वंदिता एवं भूमंडली करण क कारण राष्टो के बीच निर्भरता को बढावा मिला है,जिससे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के मुख्य विषय वस्तु के तत्व कमजोर हुए है।
- वर्तमान में अनेक वैश्विक मुददो पर गुटनिरपेक्ष देशो में असहमति पैदा हो चुकी है।
- गुटनिरपेक्ष आन्दोलन वर्तमान की समस्याओं को लेकर भी गंभीर प्रयास नही कर रहा है और आतंकवाद,जयवायु परीवर्तन,शरणार्थी समस्याओं पर इसका कोई ऐजेंडा नही है।
- सदस्य देश अपने आपसी मतभेदो को भी दूर करने में नाकाम रहे है जिससे सदस्य देशों में संगठन के प्रति आकर्षण कम हो गया है।उदाहरण के लिए ईराक—ईरान युद्व, भारत—चीन के मध्य मतभेद आदि।